RNI No. UPHIN/2000/03766 ● ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

(जुलाई-2025)

वेदों में पंच परिवर्तन

अभ्यासाद्धार्यते विद्या कुलं शीलेन धार्यते।
गुणेन ज्ञायते त्वार्यः कोपो नेत्रेण गम्यते॥

विद्या की प्राप्ति निरंतर अभ्यास से होती है। कुल की स्थिरता/यश उत्तम गुण-कर्म से होती है। आर्य की पहचान श्रेष्ठ गुणों से और क्रोध की नेत्रों से हो जाती है।

आदिगुरु@कैलाश पर्वत

आषाढ़/श्रावण

वि.सं. २०८२

शक सं. १९४७

जुलाई २०२५

वर्षा ऋतु

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		१ आषाढ़ शुक्ल पक्ष षष्ठी	२ आषाढ़ शुक्ल पक्ष सप्तमी	३ आषाढ़ शुक्ल पक्ष अष्टमी	अल्लूरी सीताराम राजू जयंती ४ आषाढ़ शुक्ल पक्ष नवमी	नवरात्रि पारण ५ आषाढ़ शुक्ल पक्ष दशमी
देवशयनी एकादशी व्रत ६ आषाढ़ शुक्ल पक्ष एकादशी	७ आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वादशी	जयापार्वती व्रत प्रारम्भ, भौम प्रदोष व्रत ८ आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	९ आषाढ़ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	कोकिला व्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा १० आषाढ़ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	११ श्रावण कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	१२ श्रावण कृष्ण पक्ष द्वितीया
जयापार्वती व्रत समाप्त १३ श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत १४ श्रावण कृष्ण पक्ष चतुर्थी	१५ श्रावण कृष्ण पक्ष पंचमी	कर्क संक्रान्ति १६ श्रावण कृष्ण पक्ष षष्ठी	१७ श्रावण कृष्ण पक्ष सप्तमी	१८ श्रावण कृष्ण पक्ष अष्टमी	१९ श्रावण कृष्ण पक्ष नवमी
२० श्रावण कृष्ण पक्ष दशमी	कामिका एकादशी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत २१ श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी	भौम प्रदोष व्रत २२ श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	चन्द्रशेखर आज़ाद जयंती, बाल गंगाधर तिलक जयंती २३ श्रावण कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	२४ श्रावण कृष्ण पक्ष अमावस्या	२५ श्रावण शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	स्वामी करपात्री जयंती २६ श्रावण शुक्ल पक्ष द्वितीया
हरियाली तीज २७ श्रावण शुक्ल पक्ष तृतीया	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत २८ श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्थी	नाग पंचमी २९ श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी	श्री कल्कि जयंती ३० श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	गोस्वामी तुलसीदास जयंती ३१ श्रावण शुक्ल पक्ष सप्तमी		

dharmkshetra.com

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

जुलाई, 2025

वर्ष : 25 अंक : 07

सलाहकार समिति

उदयभान सिंह, रविन्द्र सिंह चौहान
रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव

संपादक

कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक

डॉ. नीलम कुमारी

प्रबंध निदेशक

मुकेश कुमार

प्रबंध संपादक

पंकज राणा

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

वेदों में पंच परिवर्तन.....05

पंच परिवर्तन : राष्ट्रनिर्माण के पांच-सूत्र व पांच सामाजिक परिवर्तन.....06

नागरिक कर्तव्य की अनूठी मिसाल.....08

पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास : हमारी अनकही जिम्मेदारी और RSS की प्रेरणादायी भूमिका.....10

नागरिकों के सहयोग से बदल रहे हैं साहिबी नदी के हालात.....13

ओला-वृष्टि जो भूली गई.....15

सामाजिक समरसता और सामाजिक उत्थान के पुरोधा.....16

कुटुंब प्रबोधन की अनूठी मिसाल जनपद हापुड़ का लुहारी गांव.....18

स्वतंत्रता आन्दोलन के नायकों से परिचित कराता हिंदी सिनेमा.....20

प्रधानमंत्री मोदी की ऐतिहासिक विदेश यात्रा, क्या है संदेश?.....23

आत्मनिर्भरता स्टोरी.....25

सहयोगी बनें कांवडिये.....27

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय..

ज्ञान भूमि से अलंकृत भारत वर्ष की सत्य सनातन संस्कृति अपनी समृद्ध ज्ञान परंपरा के लिए विश्व विख्यात है। जहां एक ओर वेदों में जीवन का सार है वहीं कर्म का ज्ञान देता गीता का विशुद्ध विज्ञान है।

बौद्धिक ग्रंथों का अद्भुत विशाल भंडार, दुनिया की सबसे बड़ी पांडुलिपियों का संग्रह, ज्ञान के अनेक क्षेत्रों में ग्रंथों, विचारकों और मतों की प्रामाणिक परंपरा भारत की विश्व को अमूल्य देंन है। भारत की ज्ञान परंपरा गंगा नदी के प्रवाह की तरह प्राचीन और अविरल है, वेदों (उपनिषदों) से लेकर श्री अरविंद तक, ज्ञान सभी जिज्ञासाओं के केंद्र में रहा है।

वेद हमारी सत्य सनातन संस्कृति की अमूल्य देंन है, क्योंकि इसमें सभी प्रकार के ज्ञान का समावेश है। अगर वेदों को भारत की आत्मा कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज जब भारत पुनः विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर है तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय संघचालक परम आदरणीय श्री मोहन भागवत ने विवेकानंद जी के उद्घोष 'वेद सभी धर्मों का मूल है' एवं महर्षि दयानंद सरस्वती के उद्घोष 'वेदों की ओर लौटो' को अंगीकार करते हुए भारत के समाजिक व सांस्कृतिक पुनर्जागरण हेतु पंच परिवर्तन का आह्वान किया है जो वर्तमान परिदृश्य में जब विश्व तृतीय विश्व युद्ध की ओर बढ़ रहा है जैसी विषम परिस्थितियों में और भी आवश्यक हो जाता है।

पंच परिवर्तन न केवल भारत को समृद्धशाली बनाने के लिए आवश्यक है बल्कि विश्व कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करने के लिए नितान्त आवश्यक है।

एक ओर जहां 'स्व' का आत्मबोध अपने देश, अपनी मातृभूमि से प्रेम करना, गर्व करना सिखाता है वहीं 'सामाजिक समरसता' सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुम्बकम् की बात करती है। जहां एक और 'नागरिक कर्तव्य' अनुशासन सिखाता है वहीं 'पर्यावरण' हमें प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाते हुए इस वसुंधरा को हरा भरा बनाने के संकल्प को मजबूत करता है। अंततोगत्वा सम्पूर्ण विश्व को अपना मानते हुये विश्व बंधुत्व को बढ़ावा देने के लिए कुटुंब प्रबोधन पर जोर देता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक विचार-प्रवाह है जो भारत को एक सुदृढ़, समृद्ध और समरस राष्ट्र के रूप में देखता है। अपने शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ते हुए, संघ ने समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए जो पंच परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित किया है वो सामाजिक जीवन के विभिन्न मूल दृष्टिकोणों को स्पर्श करते हैं और एक नए भारत की नींव रखते हैं।

अतः अब समय आ गया है कि हम सभी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा बताए गए वेदों से निकले इन पंच परिवर्तन को अपने जीवन में अपनायें ओर एक समृद्ध, सशक्त व शांतिप्रिय भारत बनाने एवं विश्व के कल्याण में अपना सकारात्मक योगदान दें।

डॉ. नीलम कुमारी

ISSN No. 2581-3528

वेदों में पंच परिवर्तन

डॉ. प्रवीण विद्यालंकर
वैदिक दर्शन विशेषज्ञ

वेद हमारी वैदिक सनातन संस्कृति की अमूल्य एवं अद्भुत देन हैं। अमूल्य इसलिए कि वेदों में सम्पूर्ण पृथ्वी से लेकर आकाश, अंतरिक्ष, ग्रहों, मंदाकिनियाँ, आकाशगंगाएँ तक तथा अध्यात्म, ज्ञान–विज्ञान, चिकित्सा, पर्यावरण, आभियांत्रिकी आदि समस्त प्रकार के ज्ञान की चर्चा एवं उपदेश है। अद्भुत इसलिए कि वेदों में किसी सम्प्रदाय विशेष की चर्चा न होकर सम्पूर्ण मानव जाति (जिसमें सकल संसार निहित है) से लेकर समस्त प्राणी जगत की चर्चा है। अमूल्य एवं अद्भुत इसलिए भी कि कोई अन्य देश चाहें किसी भी क्षेत्र में कितनी भी प्रगति क्यों न कर ले, किन्तु अनमोल धरोहर के रुप में वेद भारत की आत्मा हैं।

अतः ऐसे अपौरुषेय, प्राचीनतम, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की पहली एवं पावनतम पुस्तक वेदों में पञ्च परिवर्तन हम सभी के लिए अत्यंत प्रेरक एवं ग्राह्य हैं।

आज जब राष्ट्र 21वीं सदी की नई चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक परम आदरणीय श्री मोहन भागवत जी ने स्वामी विवेकानन्द जी के उद्घोष ''वेद सभी धर्मों का मूल है'' एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के उद्घोष ''वेदों की ओर लोटो'' को अंगीकार कर भारत के सामाजिक व सांस्कृतिक पुनर्जागरण हेतु पंच परिवर्तन का आवाह्न किया है।

मेरे विचार से पंच परिवर्तन एक वैचारिक क्रान्ति है, जिसका उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज को सत्य, अनुशासन, राष्ट्रप्रेम तथा जीवन को सकारात्मक व सार्थक भावनाओं से सींचना है। पंच परिवर्तन के पाँच बिन्दु प्रस्तुत हैं :–

(1) स्वबोध (2) कुटुम्ब प्रबोधन

(3) सामाजिक समरसता

(5) नागरिक कर्तव्य

(5) पर्यावरण संरक्षण।

स्वबोध - मैं कौन हूँ?,

मैं कहाँ से आई हूँ/आया हूँ?

मुझे क्या करना है?

मैं क्या कर रही हूँ/ रहा हूँ?

और मुझे क्या करना चाहिए? उपर्युक्त इन पाँचों प्रश्नों का उत्तर अपने जीवन में ढूँढ़ना ही स्वबोध है। स्वबोध के लिए यजुर्वेद का आदेश है कि ''उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि।'' (यजु० १५/५४)

अर्थात् हे मानव तू जाग। आत्मसाधना कर यानी अपनी आत्मशक्ति को पहचान।

कुटुम्ब प्रबोधन :- परिवार राष्ट्र की आधारशिला है। व्यक्ति सदाचार, सद्गुण, संयम–मानवीय मूल्य, चारित्रिक दृढ़ता आदि गुणों को परिवार में ही सीखता एवं धारण करता है।

जिसकी प्रक्रिया माँ के गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है ''वह संतान भाग्यशाली है, जिसके माता एवं पिता दोनों ही धार्मिक व विद्वान हैं।''

क्योंकि एक आदर्श परिवार आदर्श पति–पत्नी से ही बनता है। संस्कारित माता–पिता ही अपनी संतानों को संस्कारवान बना सकते हैं।

आदर्श परिवार की पहली बात – सभी को एक दूसरे से मधुर बोलना है। अथर्ववेद का उपदेश है :–

मधोरस्मि मधुतरो मदुधान्मधुमत्तरः।

अर्थात् मेरा घर में आना, घर से बाहर जाना मधुर हो और मेरी वाणी मधुरस से भरी हो। मैं मधुर रुप हो जाऊँ।

सामाजिक समरसता : सामाजिक समरसता वैदिक सनातन संस्कृति की मूल भावनाओं में से एक है। क्योंकि हमारे देश की संस्कृति में सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग् भवेत्।।

मात्र भारत अकेला ऐसा राष्ट्र है, जिसकी पुण्य धरा से सभी के सुखी एवं निरोग रहने की ध्वनि गुँजायमान होती है। जहाँ सभी प्राणियों के कल्याण का भाव निहित है।

नागरिक कर्तव्य : यदि हम नागरिक कर्तव्य को सरल शब्दों में कहें, तो वाणी का, मन का, विचारों का, व्यवहार का अनुशासन ही नागरिक कर्तव्य का भाग है।

इस सन्दर्भ में अथर्ववेद का बड़ा ही प्रेरक मन्त्र है–

''उद्यानं ते पुरुषं नावयानं
जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि।''

अर्थात् परमात्मा ने हमें ऊपर उठने के लिए बनाया है, नीचे गिरने के लिए नहीं। उत्थान कर, पतन नहीं।

पर्यावरण संरक्षण : पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन सम्बन्धी ज्वलन्त समस्याओं का समाधान वेदों में है, जो सकल संसार का मार्ग प्रशस्त करेगा। भूमि, प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण एवं विस्फोटों से प्रदूषण आदि सभी के निवारण हेतु यजुर्वेद का एक मंत्र है :–

''द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष:शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः।'' . (यजु० ३६/१७)

जिसमें पृथिवी से अन्तरिक्ष पर्यन्त शान्ति एवं सन्तुलन की प्रार्थना की गयी है। ■

ISSN No. 2581-3528

पंच परिवर्तन : राष्ट्रनिर्माण के पांच-सूत्र व पांच सामाजिक परिवर्तन

मनोज कुमार गुप्ता
शोधार्थी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) एक विचार-प्रवाह है जो भारत को एक सुदृढ़, समृद्ध और समरस राष्ट्र के रूप में देखता है। अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष (2025) की ओर बढ़ते हुए, संघ ने समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए पांच प्रमुख विषयों पर ध्यान केंद्रित किया है। इन्हें 'पंच-परिवर्तन' का नाम दिया है, जो सामाजिक जीवन के विभिन्न मूल दृष्टिकोणों को स्पर्श करते हैं और एक नए भारत की नींव रखते हैं।

ये पांच विषय हैं –

1-सामाजिक समरसता

2-परिवार प्रबोधन (कुटुंब प्रबोधन)

3- पर्यावरण संरक्षण

4-स्वदेशी व आत्मनिर्भरता और

5-नागरिक कर्तव्य।

उपरोक्त पांचों स्तंभ निम्न प्रकार हमारे आधारभूत जीवन में एकता को दृढ़ करते हैं :-

1. **सामाजिक समरसता** : सामाजिक समरसता का अर्थ है एक ऐसा समाज, जो जाति, पंथ और वर्ग के भेदभाव से पूरी तरह मुक्त हो। संघ का मानना है कि एक मजबूत राष्ट्र की पहली शर्त उसके लोगों के बीच 'अटूट एकता' है। सदियों से चली आ रही छुआछूत, ऊँच-नीच और जातीय भेदभाव जैसी कुरीतियाँ समाज को कमजोर करती हैं।

इसे दूर करने के लिए, संघ 'एक मंदिर, एक श्मशान और एक कुआँ' के सिद्धांत पर जोर देता है, जिसका अर्थ है कि सभी हिंदुओं के लिए पूजा स्थल, अंतिम संस्कार की जगह और पानी के स्रोत समान होने चाहिए। स्वयंसेवक विभिन्न जातियों के लोगों के बीच सहभोज (एक साथ भोजन), रक्त-संबंध और रोटी-बेटी के संबंध स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, ताकि सामाजिक दूरियाँ समाप्त हों और अपनेपन, आत्मीयता का भाव जागे। इसका अंतिम लक्ष्य एक ऐसा समरस समाज बनाना है, जहां प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान हो और सभी मिलजुलकर राष्ट्र की प्रगति में योगदान दें।

2. **परिवार प्रबोधन या कुटुंब प्रबोधन** : परिवार किसी भी समाज की सबसे पहली और महत्वपूर्ण पाठशाला होता है। संघ का मानना है कि मजबूत और संस्कारित परिवार ही एक सुदृढ़-राष्ट्र का आधार बन सकते हैं। आज के दौर में, जब एकल परिवारों का चलन बढ़ रहा है और पीढ़ियों के बीच संवाद कम हो रहा है, 'कुटुंब प्रबोधन' या 'परिवार प्रबोधन' का महत्व और भी बढ़ जाता है।

इसके अंतर्गत, संघ परिवारों को दिन में एक बार एक साथ बैठकर भोजन करना चाहिये। सप्ताह में एक बार भजन-कीर्तन करने और घर के विषयों पर परिवार के सभी सदस्यों को चर्चा करने के लिए प्रेरित करता है। इसका उद्देश्य परिवार के सदस्यों, विशेषकर बच्चों में नैतिक मूल्य, अपनी संस्कृति, परंपरा और बड़ों के प्रति सम्मान का भाव जगाना है। जब परिवार में संस्कार और संवाद का वातावरण होगा, तो वहां से निकलने वाले नागरिक भी अनुशासित और जिम्मेदार बनेंगे।

ISSN No. 2581-3528

3. **पर्यावरण संरक्षण :** भारतीय संस्कृति में प्रकृति को सदैव पूज्य माना गया है। हमने नदियों को माँ, पेड़ों को देवता और पर्वतों को पवित्र माना है। पर्यावरण संरक्षण इसी भारतीय जीवन दृष्टि का आधुनिक रूप है। आज जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों की कमी एक वैश्विक चुनौती है।

संघ इस दिशा में व्यापक जन–भागीदारी पर जोर देता है। स्वयंसेवक नियमित रूप से वृक्षारोपण अभियान चलाते हैं, जल संरक्षण के लिए तालाबों की सफाई और नए जल स्रोतों के निर्माण में मदद करते हैं, और प्लास्टिक–मुक्त जीवनशैली अपनाने के लिए लोगों को जागरूक करते हैं। 'एक पेड़ देश के नाम' जैसे अभियान हों या 'जल है तो कल है' का संदेश, इसका मूल उद्देश्य प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर विकास करना है। प्रकृति राष्ट्र वस्तुतः हमें सभी कुछ तो प्रदान करते हैं। हमारा भी कर्तव्य है कि हम संतुलित रूप के उपयोग करें।

4. **'स्व' या स्वदेशी और आत्मनिर्भरता :** स्वदेशी का अर्थ केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार नहीं,अपितु अपने देश में बनी वस्तुओं को गर्व से उपयोग करना है। आत्मनिर्भरता का लक्ष्य भारत को आर्थिक, तकनीकी और रक्षा जैसे हर क्षेत्र में स्वावलंबी बनाना है। जब हम स्थानीय उत्पादों को खरीदते हैं, तो पैसा देश के छोटे कारीगरों, उद्यमियों और किसानों तक पहुंचता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

'वोकल फॉर लोकल' का नारा इसी भावना को दर्शाता है। संघ लोगों को दैनिक जीवन में स्वदेशी वस्तुओं को प्राथमिकता देने, स्थानीय हुनर को सम्मान देने और देश को एक उत्पादन केंद्र बनाने की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करता है। एक आत्मनिर्भर भारत ही विश्व में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकता है।

5. **नागरिक कर्तव्य :** एक लोकतंत्र में नागरिकों को जितने अधिकार मिलते हैं, उतने ही उनके कर्तव्य भी होते हैं। अक्सर लोग अपने अधिकारों की बात तो करते हैं, लेकिन कर्तव्यों को भूल जाते हैं। संघ नागरिकों में अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूकता लाने पर विशेष बल देता है।

इन कर्तव्यों में शामिल हैं - कानूनों का पालन करना, ईमानदारी से टैक्स चुकाना, मतदान में अवश्य भाग लेना, अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखना, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुंचाना और राष्ट्रीय प्रतीकों (तिरंगा, राष्ट्रगान) का सम्मान करना। जब देश का हर नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन सम्पूर्ण निष्ठा से करेगा, तो व्यवस्था स्वयं सुधर जायेगी और भारत एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ेगा।

परिवार किसी भी समाज की सबसे पहली और महत्वपूर्ण पाठशाला होता है। संघ का मानना है कि मजबूत और संस्कारित परिवार ही एक सुदृढ़-राष्ट्र का आधार बन सकते हैं। आज के दौर में, जब एकल परिवारों का चलन बढ़ रहा है और पीढ़ियों के बीच संवाद कम हो रहा है, 'कुटुंब प्रबोधन' या 'परिवार प्रबोधन' का महत्व और भी बढ़ जाता है।

निष्कर्ष :- उपरोक्त पंच–परिवर्तन एक–दूसरे से गहराई में भारत की अंतरात्मा से जुड़े हुए हैं। समरस समाज ही परिवार को मजबूत करेगा, संस्कारित परिवार पर्यावरण की चिंता करेगा, पर्यावरण के प्रति जागरूक समाज स्वदेशी अपनाएगा और इन सभी गुणों से युक्त नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करेगा। यह पंच–परिवर्तन भारत के संगठित, स्वाभिमानी और शक्तिशाली निर्माण का व्यावहारिक दृष्टिकोण है, जिस पर चलकर प्रत्येक नागरिक राष्ट्र–निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकता है। ■

पर्यावरण पर दोहे

पेड़ लगाओ दो कदम, छाया पाओ चार,
धरती माता धन्य हो, जीवन हो साकार।

वृक्ष न काटो अंधवत, जल भी है सीमित,
धरती रोती है अब तो, मानव क्यों न चिंतित?

नदियाँ हैं माँ के समान, दो इन्हें सम्मान,
गंदगी से बचाइए, करें न इनका अपमान।

शुद्ध वायु ही धन है, जीवन का आधार,
प्रदूषण से जो बच सके, वहीं बने सरदार।

धरती प्यासी बोलती, दो मुझे विश्राम,
हरियाली लौटाओ तुम, बस यही है काम।

सूरज, जल, और वनों से, चलता है संसार,
संरक्षण ही धर्म है, यही जीवन सार।

कूड़ा कचरा मत फेंको, नदियों के बहाव,
स्वच्छता का दीप जलाओ, यही हो प्रभाव।

छोटा हो या हो बड़ा, पेड़ लगाना धर्म,
हरियाली ही जीवन है, यही सच्चा कर्म।

अलका रानी : सहायक अध्यापिका
उच्च प्राथमिक विद्यालय रामनगर,
जनपद - अमरोहा

ISSN No. 2581-3528

नागरिक कर्तव्य की अनूठी मिसाल

राष्ट्रपति पुरुस्कार से सम्मानित होमगार्ड विभाग के जिला कमाण्डेन्ट श्री वेदपाल सिंह चपराना

डॉ. नीलम कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
किसान पी.जी. कॉलेज, सिंभावली (हापुड़)

ये कहानी है गांव की मिट्टी में रचे बसे व किसान के घर जन्मे जिला कमाण्डेन्ट श्री वेदपाल सिंह चपराना की जिन्होंने ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, समर्पण, सेवाभाव दृढ़, इच्छा शक्ति से वो कर दिखाया जो बड़ी-बड़ी नोकरियां रखने वाले व धन दौलत वाले लोग भी नहीं कर पाते।

आपने होमगार्ड्स विभाग में जिला कमाण्डेन्ट होते हुए होमगार्ड विभाग में नए नए कीर्तिमान स्थापित किये। तथा सैदव समाज सेवा में तत्पर रहते हुए हजारों लोगों की सहायता की है।

पर्यावरण के प्रति अपनी संवेदना दिखाते हुए हजारों की संख्या में पौधरोपण किया है।

वास्तव में समाज सेवा व देश प्रेम की ज्वाला आपके रक्त के कण कण में है क्योंकि आपका संबंध क्रांति धरा मेरठ के पांचली ग्राम से है। आपके पूर्वज पांचली गाँव से निकलकर ही सेतकुआँ गांव में आकर बसे थे।

आपका जन्म 14 /8 / 1972 को जिला मेरठ में थाना खरखोदा के ग्राम सेतकुआँ में हुआ। वर्तमान में आप जिला बिजनौर के होमगार्ड विभाग में जिला कमाण्डेन्ट के पद पर कार्यरत हैं। आपका आवास मेरठ के 73, पुलिस एन्क्लेव, हापुड़ रोड़ मेरठ में है।

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित जिला कमांडेड वेदपाल सिंह चपराना के न केवल होमगार्ड विभाग में उनके द्वारा किये गए कार्यो बल्कि सामाजिक क्षेत्र में उनके अथक प्रयासों को सराहा जा रहा है। यही कारण है कि 2017 में प्रदेश के ईमानदार अधिकारी के रूप में भी आपको सम्मानित किया जा चुका है।

सन 2010 में आपके अथक प्रयासों से ही पांचली खुर्द गॉव में होम गार्ड में धनसिंह कोतवाल प्रशिक्षण केन्द्र मेरठ का निर्माण प्रदेश सरकार द्वारा कराने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया जो कि किसी क्रांति से संबंध रखने वाले किसी क्रांतिकारी के नाम पर पहला सरकारी संस्थान मेरठ में बना। इतना ही नहीं सदर कोतवाली मेरठ

जहां से 1857 की क्रांति प्रारम्भ हुई थी वहां पर शहीद धन सिंह कोतवाल जी की प्रतिमा लगवाने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

आपके मन में धनसिंह कोतवाल जी के लिए अथाह सम्मान इसलिए भी है क्योंकि आप उन्ही के वंशज भी है। आप ही के शब्दों में 'मै स्वयं पारिवारिक पृष्ठभूमि से कोतवाल धनसिंह जी के गांव पांचली से जुड़ा हुआ हूँ। मेरे पूर्वजों ने मुझे बताया कि हम पांचली खुर्द के ही मूल निवासी हैं। सन 1857 में अंग्रेजों की दमनात्मक कार्यवाई के कारण पांचली खुर्द से विस्थापित होकर खरखोदा के पास सेतकुआं गांव में स्थापित हो गए थे। अतः मेरी भी यह इच्छा हुई कि कुछ प्रयास अपने पूर्वजों के लिए मेरे द्वारा भी होना चाहिए।

आपके कुशल नेतृत्व में बिजनौर के होमगार्ड विभाग में कुल 1205 जवानों की फोर्स है। जो दिन रात जनपद के कोने कोने पर अपना अपना कार्य बखूबी से कर रही है। एक जुलाई 2024 को जिला कमांडेड वेदपाल सिंह चपराना की तैनाती के बाद से बिजनौर के होमगार्ड विभाग में व्यापक सुधार हुए। जिसका नजारा उनके कार्यालय में साफ नजर आता है। उनके नेतृत्व में हरियाणा चुनाव में 163 जवान, मुरादाबाद कुंदर की उपचुनाव में 225 व दिल्ली चुनाव में 200 जवानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए विभाग का नाम रोशन किया। कुंभ मेला में बिजनौर से 210 जवानों को तैनात किया गया था। जहां पर वह लगनशीलता के साथ अपने अपने कर्तव्यों को अंजाम दे रहे है। हर सप्ताह स्टाफ बैठक प्रारंभ करके एवं बेस्ट टर्न आउट (साफ वर्दी पहनने) जैसे प्रतिस्पर्धा वाले कार्यक्रम बनाकर वह फोर्स को सक्रिय रख रहे हैं। मतलब साफ है कि जिला कमांडेंट वेदपाल सिंह चपराना के नेतृत्व में विभाग लगातार उन्नति के पद पर अग्रसर है और जवानों की टीम में भी उत्साह नजर आ रहा है। यही कारण है कि अब होमगार्ड के जवानों को सम्मान की नजरों से देखा जाने लगा है। अब उनको वही सम्मान मिल रहा है जो पुलिस के जवानों को मिलता था।

यह भी उल्लेखनीय है कि जिला कमांडेंट होमगार्ड, वेदपाल सिंह चपराना का कार्यकाल बड़ा ही दिलचस्प रहा है। वह जहां पर भी रहते है, वहीं पर विभाग कार्यालय का कायाकल्प कराना उनकी प्राथमिकताओं में शुमार हो जाता है। यही कारण है कि 2012 में उन्होंने मेरठ में रहते हुए विभाग का नया कायाकल्प कर दिया। उसी की तर्ज पर उत्तर प्रदेश में आठ ट्रेनिग सेंटर बनाये गए है। जबकि इससे पूर्व किराए पर ही ट्रेनिग सेंटर चल रहे थे। उनकी कार्यशैली एवं विभाग के प्रति समर्पण भाव व ईमानदारी को देखते हुए 15 अगस्त 2024 को उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त –

1–दो बार 'गुर्जर गौरव' सम्मान से आप सम्मानित है।

2–होमगार्डस विभाग में होमगार्डस मंत्री, प्रमुख सचिव होमगार्ड्स व डायरेक्टर जनरल होमगार्डस द्वारा ईमानदार अधिकारी के रूप में

लखनऊ में सम्मानित व पुरुस्कृत है।

3–कोरोना महामारी में राहत एवं बचाव कार्य के लिए डायरेक्टर जनरल, होमगार्ड्स द्वारा कोमेन्डेशन डिस्क (गोल्ड) द्वारा सम्मानित है।

4–2001 से वर्तमान तक समस्त ग्राम पंचायत निर्वाचन, विधान सभा निर्वाचन, लोक सभा निर्वाचन व अन्य प्रांतों के विभिन्न निर्वाचनों में अग्रणीय व सराहनीय भूमिका व नेतृत्व के लिए विभिन्न आई० पी० एस० व विभागीय उच्चाधिकारियों द्वारा सम्मानित व पुरुस्कृत हैं।

5–समाज सेवा के लिए लगातार समर्पण व कार्यों के लिए अनेकों बार विशिष्ट गणमान्य राजनेताओं व सामाजिक लोगों द्वारा सम्मानित व पुरुस्कृत है।

आपने अपने करियर की शुरुआत केनरा बैंक मेरठ में लिपिक के पद पर कार्य कर की। एल०आई०सी० में जेड०एम० क्लब का तीन साल मेम्बर रहने के बाद पशुपालन विभाग में फार्मेसिस्ट के पद पर कार्य। इन सबमे उल्लेखनीय कि विभिन्न शैक्षिक संस्थानों में विभिन्न लाभ रहित पदों पर कार्य किया। इसके अतिरिक्त आप अनेक सामाजिक एवं राजनैतिक गतिविधियो में सम्मिलित रहते हैं।

आप कक्षा 11 से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का सदस्य व विद्यार्थी जीवन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की समस्त गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते आये है।

आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में बाल स्वयंसेवक के रूप में कक्षा 11 से वर्तमान तक स्वयंसेवक के रूप में सेवारत हैं।

सन् 1988 से विश्व हिन्दू परिषद व बजरंग दल के साथ मिलकर राम जन्म भूमि आदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।

सन 1992 में विद्यार्थी परिषद के बेनर तले डी०एन० डिग्री कालेज में छात्रसंघ का चुनाव लड़ा व विजयी घोषित हुए।

विद्यार्थी परिषद व अन्य अनुसांगिक संगठनों के साथ मिलकर स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने के लिए जनचेतना कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी रही। जीवन रक्षा नागरिक समिति (रजी०) के तत्वाधान में विगत 10 वर्षों से प्रत्येक वर्ष हजारों पौधों का रोपण व संरक्षण करते आ रहे हैं।

आरम्भ से ही गरीब बेसहारा पिछडों व शोषितों की मदद करना व उन्हे न्याय दिलाना उनकी प्राथमिकता में रहा है।

मानव कल्याण सोसाईटी (रजी०) के तत्वाधान में शिक्षा, न्याय, चिकित्सा व पर्यावरण के लिए जगह–जगह कैम्पों में भाग लेना व वंचित लोगों को न्याय दिलाने में आप सैदव तत्पर रहते हैं।

प्रत्येक वर्ष गर्मी में प्यासे लोगों के लिए प्याऊ लगाकर पानी पिलाना व सर्दी में बेसहारा व गरीब लोगों के लिए अलाव की व्यवस्था करना व कम्बल वितरण करना।

आखों के समस्त रोगों के लिए 'चमन नेत्र सुधार' के नाम से आयुर्वेदिक दवा बनाना व निशुल्क वितरण करते हैं।

देश के उच्च कोटि के संतों का सानिध्य (यथा योग ऋषि स्वामी कर्मवीर जी महाराज संस्थापक अंतर्राष्ट्रीय पंतजली योग पीठ पुरकाजी, स्वामी विवेकानन्द जी महाराज कुलपत्ति प्रभात आश्रम टीकरी गुरुकुल मेरठ, आर्यसमाज के सर्वोच्च संत स्वामी चितेस्वरानन्द सरस्वती जी महाराज संस्थापक साधना कुटी धोलास देहरादून।) आदि के विचारों को जन जन तक पहुँचाकर भारतीय सभ्यता व संस्कृति को बढ़ावा देते है।

नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत हरिद्वार से बलिया तक गंगा किनारे 28 जन सभाये करके माँ गंगा के प्रति जनता में श्रद्धा व स्वच्छता का भाव जागृत करने जैसा पुण्य कार्य करते है।

आपके अंदर सेवा भाव इतना कूट कूट कर भरा है कि अगर कोई लाचार, बेसहारा, गरीब, रोगी आपको राह चलते मिल जाता है तो आप उसकी या यथायोग्य सहायता करते हैं अर्थात अगर किसी को धन की आवश्यकता है तो आप उसे धन देकर उसकी सहायता करते हैं अगर कोई रोगी है तो उसका उपचार स्वयं कराते हैं। अगर किसी सामाजिक या प्रशासनिक कार्य है तो उसको उसी तरह से सम्पूर्ण करने का प्रयास करते हैं।

आपको गौमाता से इतना प्यार है कि आप आपने घर में तो गौमाता की सेवा करते है रास्ते में अगर कोई गौमाता या बछड़ा मिल जाये तो उसका दर्द उनसे देखा नहीं जाता। और उसकी उपचार की व्यवस्था स्वयं ही करते हैं।

एक ऐसी ही कहानी मुझे इस सन्दर्भ में स्मरण हो आयी एक बार की बात है मैंने अपने घर पर एक पुताई वाले को बुलाया, उसका नाम श्याम बाबू था।

हम उनसे बातों बातों में वेदपाल जी का जिक्र कर बैठे। तब अचानक उनके मुँह से निकला कि अरे साहब वेदपाल चपराना जी तो बहुत भले इंसान है। आपसे पहले मैंने उन्हीं के यहाँ पुताई की थी। लेकिन मेरी बीमारी की वजह से मेरा संपर्क उनसे टूट गया। फिर एक दिन उनका फोन मेरे पास आया। उन्होंने मेरा हाल चाल जाना तब मैंने उन्हें बताया कि मेरी कमर की स्पाइन में बहुत परेशानी है जिसकी वजह से मै चारपाई से भी नहीं उठ पा रहा हूं।

जब उन्होंने इतना सुना तो उन्होंने तुरंत मुझे गाड़ी भेजकर अपने पास बुलाया उन्होंने न केवल मेरी आर्थिक सहायता की बल्कि मेरी बीमारी का इलाज स्वयं अपनी गाड़ी से डॉक्टर के पास भेजकर कराया।

आज अगर मैं अपने पैरों पर खडा हूँ तो ये सब वेदपाल चपराना जी का ही आशीर्वाद है।

उनकी कहानी सुनकर मेरी आँखों मे आंसू आ गए। मानव सेवा, समाजसेवा की उनकी अनेकों कहानियां है। जिनको कहने के लिए शब्द और कागज कम पड़ जाए । परन्तु उनकी कर्तव्यनिष्ठा, धर्मनिष्ठा व, समाज सेवा की एक छोटी सी कहानी से उनका आप सभी से परिचय कराने का प्रयास मैंने किया।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस कहानी को पढ़कर हमारी युवा पीढ़ी अवश्य ही प्रेरित होगी और अपने नागरिक कर्तव्यों का निर्वहन सही प्रकार से करने की दिशा में प्रयासरत होगी। क्योंकि कहते हैं कि बूंद बूंद से घड़ा भरता है उसी प्रकार अगर हम सभी सेवा भाव से अपने अपने कर्तव्यों का पालन करगे तो एक सुदृढ़ व सशक्त भारत निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने सत्य ही कहा है कि–

परहित सरिस धर्म नहिं भाई ।
परपीड़ा सम नहीं अधिमाई।।

■

ISSN No. 2581-3528

पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास : हमारी अनकही जिम्मेदारी और RSS की प्रेरणादायी भूमिका

अनुराग शुक्ला
प्रवक्ता, रूद्रा इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नानपुर हापुड़

हम इस विशाल ब्रह्मांड में मात्र एक छोटा सा हिस्सा हैं, पर इस नीले ग्रह, हमारी धरती पर, हमारा अस्तित्व केवल जीने के लिए नहीं है। हम यहाँ आए हैं इसे संवारने, बचाने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसे और भी बेहतर बनाने की असीम जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाने के लिए। आज, जब मानव जाति ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व ऊँचाइयों को छुआ है, यह एक विडंबना ही है कि यही तीव्र विकास हमारी धरती को एक अभूतपूर्व संकट के मुहाने पर ले आया है। प्रदूषण का बढ़ता स्तर, जलवायु परिवर्तन की भयावहता, वनों का अंधाधुंध कटाव, जैव विविधता का तेजी से होता क्षरण, और प्राकृतिक संसाधनों का बेलगाम दोहन– ये सब हमारी ही अनियंत्रित गतिविधियों और अदूरदर्शिता का प्रत्यक्ष परिणाम हैं।

पर्यावरण केवल कुछ पेड़, नदियाँ या वन्यजीवों का समूह नहीं है। यह हमारा आदिम घर है, हमारी हर साँस का आधार है, हमारी हर निवाले का स्रोत है। यह वह जीवनदायिनी शक्ति है जो हमें अस्तित्व प्रदान करती है। पर क्या हमने कभी ठहरकर सोचा है कि यदि यह घर ही नहीं रहेगा, यदि यह आधार ही डगमगा जाएगा, तो हमारा अस्तित्व कहाँ बचेगा? यह प्रश्न आज हर संवेदनशील मनुष्य के मन में उठना चाहिए, क्योंकि इसका उत्तर ही हमारे भविष्य की दिशा तय करेगा।

वर्तमान पर्यावरण संकट : एक डरावना सच- आज हमारी धरती पर ग्लोबल वॉर्मिंग (वैश्विक तापन) के भयावह प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ की परतें तेजी से पिघल रही हैं, जिससे समुद्र का जलस्तर निरंतर बढ़ रहा है। यह वृद्धि केवल भविष्य की चिंता नहीं, बल्कि वर्तमान का भयावह यथार्थ है, जो छोटे द्विपीय राष्ट्रों और तटीय शहरों के अस्तित्व को गंभीर खतरे में डाल रही है। ओजोन परत का क्षरण, जलवायु असंतुलन, असामान्य सूखे, विनाशकारी बाढ़ें, अप्रत्याशित चक्रवात और तापमान में लगातार हो रही वृद्धि। ये सब केवल आँकड़े नहीं हैं, बल्कि हमारे आसपास के मौसम ने भी अब स्पष्ट चेतावनी देनी शुरू कर दी है। कहीं असहनीय भीषण गर्मी, तो कहीं समय से पहले अप्रत्याशित वर्षा, और कहीं पीने के पानी की भारी किल्लत, ये दृश्य अब सामान्य होते जा रहे हैं। यह संकट केवल प्राकृतिक आपदाओं तक सीमित नहीं है। ग्लोबल वॉर्मिंग और पर्यावरणीय असंतुलन का सीधा असर हमारी खाद्य सुरक्षा पर पड़ रहा है, जिससे फसलों की पैदावार प्रभावित हो रही है। पेयजल की समस्या विकराल रूप ले रही है, क्योंकि भूजल स्तर लगातार गिर रहा है और जल स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। ऊर्जा उत्पादन पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ रहा है और सबसे महत्वपूर्ण, यह हमारे स्वास्थ्य और आजीविका को सीधे तौर पर खतरे में डाल रहा है। लाखों लोग जलवायु शरणार्थी बनने को मजबूर हो सकते हैं, और अनेक प्रजातियाँ विलुप्ति की कगार पर पहुँच चुकी हैं।

अगर हम आज नहीं जागे, यदि हमने अपनी जीवनशैली और उपभोग की आदतों में मौलिक परिवर्तन नहीं किए, तो कल पछताने के सिवा हमारे पास कुछ नहीं बचेगा। यह केवल पर्यावरणविदों की चिंता नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति की चिंता होनी चाहिए जो इस धरती पर स्वयं और अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित भविष्य चाहता है।

सतत विकास : वर्तमान और भविष्य के बीच संतुलन का सेतु - विकास की बात जब भी उठती है, हमारे मानस पटल पर अक्सर बड़ी–बड़ी गगनचुंबी इमारतें, चौड़ी चमचमाती सड़कें और विशाल शॉपिंग मॉल की तस्वीरें उभरती हैं। लेकिन क्या यह तथाकथित 'विकास' वास्तव में स्थायी है? क्या यह हमें एक उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जा रहा है? सतत् विकास (Sustainable Development) की अवधारणा हमें एक गहरी और दूरदर्शी सोच प्रदान करती है। इसका अर्थ है – ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करे, परंतु भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता को किसी भी प्रकार से खतरे में न डाले। इस अवधारणा का मूल आधार है – प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण और न्यायसंगत उपयोग, उनका पुनर्चक्रण (Recycling) और पुनः उपयोग (Reuse), पर्यावरण के प्रति गहन सम्मान, और सबसे महत्वपूर्ण, एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण। यह केवल आर्थिक लाभ कमाने का साधन नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव के बीच सामंजस्य स्थापित करने का एक दर्शन है।

यह सोच केवल सरकारों या

नीति–निर्माताओं तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि इसे हर व्यक्ति, हर संगठन, हर समुदाय और हर गाँव–शहर तक पहुँचना चाहिए। सतत विकास की जिम्मेदारी हम सभी की है, और इसके लिए प्रत्येक स्तर पर सहयोगात्मक प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं। यह एक सामूहिक चेतना का आह्वान है, जहाँ हम विकास के मायने बदलें और उसे प्रकृति के साथ संतुलन में लाएँ।

भारत सरकार और न्यायपालिका की पहल : कानून और जागरूकता का संगम- भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा अनादि काल से संस्कृति और आध्यात्मिकता का अभिन्न अंग रही है। आधुनिक युग में भी, भारत सरकार ने पर्यावरण की रक्षा के लिए कई ठोस विधायी कदम उठाए हैं।

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम (1986) : यह एक व्यापक कानून है जो पर्यावरण की रक्षा और सुधार के लिए केंद्र सरकार को व्यापक शक्तियाँ प्रदान करता है।

जल (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम (1974) : यह जल प्रदूषण को रोकने और नियंत्रित करने के लिए बनाया गया है, जिसमें प्रदूषणकारी उद्योगों पर कार्रवाई का प्रावधान है।

वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम (1981) : यह वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने और वायु की गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से लागू किया गया।

जैव विविधता अधिनियम (2002) : यह भारत की समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण, उसके सतत उपयोग और जैविक संसाधनों से होने वाले लाभों के न्यायसंगत बँटवारे को सुनिश्चित करता है।

वन्यजीव संरक्षण अधिनियम (1972) : यह देश के वन्यजीवों और उनके आवासों की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कानून है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय हरित अधिकरण (National Green Tribunal & NGT) जैसी विशेष संस्थाएँ स्थापित की गई हैं, जो पर्यावरणीय अपराधों पर त्वरित और प्रभावी निर्णय लेती हैं। यह एक विशिष्ट न्यायालय है जो पर्यावरण संबंधी मामलों में न्याय प्रदान करता है। हमारी न्यायपालिका ने भी पर्यावरण संरक्षण में एक अग्रणी भूमिका निभाई है। गंगा नदी की सफाई, ताजमहल के संरक्षण के लिए औद्योगिक प्रदूषण पर रोक, और विभिन्न विकास परियोजनाओं के पर्यावरणीय प्रभाव आकलन जैसे कई ऐतिहासिक फैसले सुनाए गए हैं। ये न्यायिक हस्तक्षेप दर्शाते हैं कि देश की सर्वोच्च संस्थाएँ भी इस गंभीर मुद्दे पर कितनी सजग हैं। परंतु, यह भी उतना ही सत्य है कि कानून और न्याय तभी अधिकतम असरदार होते हैं जब जनता स्वयं जागरूक हो, अपनी जिम्मेदारी समझे और नियमों का पालन करे। जनता की सक्रिय भागीदारी के बिना केवल कानून किताबों तक ही सीमित रह जाते हैं।

पर्यावरण केवल कुछ पेड़, नदियाँ या वन्यजीवों का समूह नहीं है। यह हमारा आदिम घर है, हमारी हर साँस का आधार है, हमारी हर निवाले का स्रोत है। यह वह जीवनदायिनी शक्ति है जो हमें अस्तित्व प्रदान करती है। पर क्या हमने कभी ठहरकर सोचा है कि यदि यह घर ही नहीं रहेगा, यदि यह आधार ही डगमगा जाएगा, तो हमारा अस्तित्व कहाँ बचेगा?

आत्मबल और सेवा का प्रतीक : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणादायक कहानी - भारत की भूमि सच्चे सेवकों और परोपकारी संगठनों की जननी रही है। ऐसे ही एक सेवाभावी संगठन में से एक है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS)। अधिकतर लोग संघ को केवल एक सामाजिक–सांस्कृतिक संगठन के रूप में जानते हैं, परंतु पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में इसका योगदान अद्वितीय और अत्यंत प्रेरणादायक रहा है, जिसकी कहानियाँ अक्सर अनकही रह जाती हैं। संघ ने निस्वार्थ भाव से समाज को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया है और कई जमीनी स्तर पर बड़े बदलाव लाए हैं।

अरवरी नदी : जो सूख गई थी, फिर बहने लगी - एक जीवनदायिनी चमत्कार राजस्थान के अलवर जिले में बहने वाली अरवरी नदी का इतिहास एक ऐसी मार्मिक गाथा है जो मानव प्रयास और प्रकृति के पुनरुत्थान की शक्ति को दर्शाता है। वर्ष 1980 के दशक में, यह नदी पूरी तरह सूख चुकी थी। इसके साथ ही, इस पर निर्भर खेत बंजर हो गए, भूजल स्तर पाताल में चला गया, और गाँवों से लोगों का पलायन शुरू हो गया। सरकारी योजनाएँ भी इस संकट को हल करने में विफल रहीं। ऐसे निराशाजनक माहौल में, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने एक अद्भुत पहल की।

उन्होंने स्थानीय ग्रामीणों और अन्य सहयोगी संगठनों के साथ मिलकर पुराने, पारंपरिक जल संचयन प्रणालियों जैसे 'जोहर' (छोटा तालाब) और 'चेक डैम' (छोटे अवरोधक बाँध) का निर्माण और जीर्णोद्धार करना शुरू किया। यह कोई आधुनिक इंजीनियरिंग परियोजना नहीं थी, बल्कि स्थानीय ज्ञान और सामुदायिक भागीदारी पर आधारित एक सरल, टिकाऊ प्रयास था। छोटे–छोटे बांधों और जलग्रहण संरचनाओं ने धीरे–धीरे वर्षा जल को रोककर भूमि में समाहित करने का कार्य किया। यह उपाय बेहद कारगर सिद्ध हुआ, क्योंकि इसने भूजल रिचार्ज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कुछ ही वर्षों में, एक चमत्कार हुआ, अरवरी नदी फिर से कल–कल करती हुई बहने लगी। यह आज भी 70 से अधिक गाँवों को जीवन दे रही है, उन्हें पानी, हरियाली और समृद्धि प्रदान कर रही है। यह किसी सरकारी योजना या बड़े पैमाने के वित्तपोषण का परिणाम नहीं, बल्कि समाज की संगठित चेतना, निस्वार्थ सेवा और संघ की प्रेरणा का एक जीता–जागता उदाहरण है। यह दर्शाता है कि जब समाज स्वयं एकजुट होकर आगे बढ़ता है, तो सूखी धरती भी फिर से हरियाली ओढ़ लेती है और जीवन का संचार होता है।

ISSN No. 2581-3528

संघ के अन्य प्रेरक अभियान : पर्यावरण के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण - संघ ने केवल अरवरी नदी को ही नहीं बचाया, बल्कि पूरे देश में अनगिनत छोटे-बड़े अभियानों और गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण के प्रति चेतना फैलाने का काम किया है। संघ का यह कार्य दिखाता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल भाषणों या सरकारी नीतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके लिए सच्ची भावना, सतत सेवा और जमीनी स्तर पर कार्य करने का जज्बा चाहिए।

'एक शाखा: एक पेड़' अभियान - इस अभियान के तहत, संघ की प्रत्येक शाखा में वृक्षारोपण को अनिवार्य किया गया। यह एक प्रतीकात्मक और प्रभावी पहल थी जिसने लाखों पेड़ों को रोपने में मदद की और स्वयंसेवकों में प्रकृति के प्रति प्रेम और जिम्मेदारी की भावना जगाई।

स्वच्छता अभियान : संघ के स्वयंसेवक गाँवों और शहरों में नियमित रूप से स्वच्छता अभियान चलाते हैं और लोगों में सफाई के प्रति जागरूकता फैलाते हैं। उन्होंने गांधी जयंती जैसे अवसरों पर बड़े पैमाने पर सफाई अभियान चलाकर समाज को प्रेरित किया है।

वनवासी क्षेत्रों में कार्य : संघ वनवासी क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों के साथ मिलकर काम करता है, उन्हें वन संरक्षण के महत्व के बारे में शिक्षित करता है और वनों की कटाई को रोकने तथा वन संपदा का विवेकपूर्ण उपयोग करने के लिए संगठित करता है।

संवेदनशीलता अभियान : संघ नियमित रूप से नदियों की सफाई, प्लास्टिक हटाओ अभियान, जल संरक्षण जागरूकता यात्राएं, और पर्यावरण-मित्र जीवनशैली अपनाने जैसे अनेक संवेदनशीलता अभियानों का आयोजन करता है। ये अभियान लोगों को पर्यावरण के मुद्दों से सीधे जोड़ने और उनमें सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

हर व्यक्ति की भागीदारी : असली परिवर्तन की चाबी - पर्यावरण की रक्षा केवल सरकारों, गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) या विशेष एजेंसियों द्वारा नहीं की जा सकती। जब तक प्रत्येक नागरिक यह दृढ़ संकल्प नहीं लेता कि-मैं बिजली-पानी जैसे बहुमूल्य संसाधनों को बर्बाद नहीं करूंगा, बल्कि उनका मितव्ययिता से उपयोग करूंगा।

मैं प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग करूंगा, और पुनर्चक्रण योग्य तथा बायोडिग्रेडेबल विकल्पों को अपनाऊंगा।

मैं हर साल कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाऊंगा, और उसकी देखभाल करूंगा जब तक वह बड़ा न हो जाए।

मैं जैविक खाद और पर्यावरण-मित्र साधनों का प्रयोग करूंगा, और रासायनिक उत्पादों से बचूंगा।

मैं दूसरों को भी पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करूंगा, और उन्हें प्रेरित करूंगा।

जब तक परिवर्तन अधूरा रहेगा, और हमारे प्रयास केवल बूंदों के समान होंगे। बच्चे, छात्र, शिक्षक, गृहिणियाँ, किसान, उद्योगपति, समाज का हर वर्ग, हर व्यक्ति अगर अपने स्तर पर इस जिम्मेदारी को उठाए, तो यह धरती फिर से हरी-भरी हो सकती है, और हम एक स्वस्थ तथा टिकाऊ भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। व्यक्तिगत प्रयास ही सामूहिक शक्ति को जन्म देते हैं।

भावनात्मक जुड़ाव : प्रकृति से रिश्ते को फिर से महसूस करें - वर्तमान युग में हमने प्रकृति के साथ अपने आदिम और पवित्र रिश्ते को कहीं खो दिया है। एक समय था जब हमारे पूर्वज पेड़ को देवता मानते थे, जल को जीवन का आधार कहते थे, और भूमि को माँ का दर्जा देते थे, यह एक भावनात्मक और आध्यात्मिक जुड़ाव था। लेकिन आज, सब कुछ केवल उपभोग की वस्तु बन गया है, जिसे केवल इस्तेमाल करके फेंक दिया जाता है। हमें इस उपभोक्तावादी सोच को बदलना होगा और प्रकृति के साथ अपने रिश्ते को फिर से स्थापित करना होगा।

हमें अपने बच्चों को सिखाना होगा कि वे पौधों से बात करें, नदियों के महत्व को समझें, और जानवरों से प्रेम करें। हमें उन्हें केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शिक्षा ही नहीं देनी है, बल्कि उनके भीतर प्रकृति के प्रति संवेदना और सम्मान की भावना भी जागृत करनी है। भावनात्मक जुड़ाव ही हमें प्रकृति की रक्षा के लिए प्रेरित करेगा और हमें यह सिखाएगा कि हम उसके अविभाज्य अंग हैं, कोई अलग इकाई नहीं।

निष्कर्ष : बदलाव हमसे शुरू होता है पर्यावरण संरक्षण की सबसे बड़ी आवश्यकता है, सामूहिक संकल्प और व्यक्तिगत जिम्मेदारी। अक्सर हम यह सोचकर उदासीन हो जाते हैं कि 'मैं अकेला क्या कर सकता हूँ?' यह सोच ही परिवर्तन की राह में सबसे बड़ी बाधा है। लेकिन जब हम यह सोचें- 'मैं क्यों न शुरुआत करूँ?', तभी सच्चे और टिकाऊ बदलाव की शुरुआत होती है। एक चिंगारी से ही विशाल अग्नि प्रज्वलित होती है, और एक व्यक्ति के प्रयास से ही बड़े आंदोलन जन्म लेते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे संगठनों की कहानियाँ हमें यह बताती हैं कि अगर जज्बा हो, दृढ़ इच्छाशक्ति हो, और समाज सेवा का अटूट संकल्प हो, तो सूखी धरती भी बहने लगती है, और बंजर जीवन में फिर से हरियाली लौट आती है। ये कहानियाँ आशा की किरण हैं, जो हमें याद दिलाती हैं कि मानव का सामूहिक प्रयास अदम्य है। आज जरूरत है एक नई सोच की, एक नई ऊर्जा की, जो हमें इस ग्रह के प्रति हमारी जिम्मेदारी का अहसास कराए। यह हमें अपने बच्चों को, अपने भविष्य को, और स्वयं को एक बेहतर, स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण देने के लिए प्रेरित करेगी। 'प्रकृति को बचाइए, वह आपको जीवन देगी। उसे खो दीजिए, और आप जीवन खो देंगे।' यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक शाश्वत सत्य है। आइए, हम सब मिलकर इस सत्य को अपने जीवन का आधार बनाएँ और एक ऐसी दुनिया का निर्माण करें जहाँ प्रकृति और मानव सह-अस्तित्व में रहें, सामंजस्य में विकसित हों। ■

ISSN No. 2581-3528

नागरिकों के सहयोग से बदल रहे हैं साहिबी नदी के हालात

डॉ. दीपा रानी
पोस्ट डॉक्टरल शोधार्थी

सनातन धर्म कहता है जहाँ स्वच्छता होती है वहीं देवी–देवताओं का प्रवास होता है। स्वच्छता से सिर्फ तन ही स्वस्थ नहीं होता बल्कि मन भी शुद्ध और स्वस्थ हो जाता है और साथ ही मनुष्य में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। सकारात्मकता मूलतः किसी समस्या से निजात पाने के समाधान की ओर अग्रसारित करती है। यह समाज की कुरीतियों को समाप्त करने और नकारात्मकता को खत्म करने की दिशा में प्रयासरत होती है या यूँ कहें सकारात्मकता किसी भी देश व समाज के विकास की प्रगति का द्योतक है।

सकारात्मक सोच का ही नतीजा है कि आम लोगों की पहल से सरकार ने सफ़ाई और स्वच्छता की गंभीरता को लेकर कई ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। समाज का हर वर्ग इससे जुड़कर सरकार, संगठन और संस्थान के साथ स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने की दिशा में प्रयासरत है। हम हमेशा ही अपने अधिकारों की बात करते हैं लेकिन कर्तव्यों की नहीं। क्या समाज के प्रत्येक व्यक्ति की यह ज़िम्मेदारी नहीं है कि वह सरकार और संगठन के साथ प्राथमिकता से सहयोग कर इस अभियान को तेज गति ही नहीं दे बल्कि इस समस्या का संपूर्ण समाधान करने में सहयोग करे। आज साहिबी नदी, जो नदी से नाले में तब्दील ही नहीं हुई अपितु इसकी स्थिति इतनी बद से बदतर हो गई है कि लोग इसे नजफगढ़ के नाले के नाम से जानने लगे हैं। लोग अपने घरों के कूड़े कचरे को इस नदी में फेंक रहे हैं। स्थिति को ख़राब होता देख प्रशासन को कई जगहों पर यह चित्रित करते हुए बोर्ड लगना पड़ा कि 'मैं साहिबी नदी हूँ मुझ में घर का कूड़ा कचरा ना फेंके,'साथ ही चेतावनी भी लिखी है कि ऐसा करने पर धारा २४ के तहत जुर्माना और कानूनी कार्यवाही की जाएगी। लेकिन कुछ भी नहीं बदला। लोगों की आनौपचारिक गैर जिम्मेदाराना सोच ने नदी को नाले में तब्दील कर डाला। लेकिन मनीषी कहते हैं वक्त बदलता है तो हालात भी बदलते हैं और लोगों की सोच भी बदलती है। शायद जब मैं अब इसके हालात की सच्ची कहानी लिख रही हूँ तो मुझे भी लग रहा है कि यहाँ आस पास के लोगों और सरकार दोनों की सोच बदली है, आम नागरिकों की पहल और सरकार के प्रयास से अब इस नदी का पुनः जीर्णोद्धार शुरू हो रहा है। लोग स्वयं सामने आकर स्वच्छता के प्रति इस भागीदारी का हिस्सा बनकर सरकार और संगठन का पूर्ण सहयोग कर रहे हैं। इस सिलसिले में मैंने वहाँ रह रहे कई व्यक्तियों के साक्षात्कार लिए उनका कहना था कभी ये नदी लोगों की जीवनदायिनी हुआ करती थी। इसका विस्तार बहुत बड़ा था। यह नदी राजस्थान और हरियाणा से होते हुए दिल्ली में मिलती है। इस नदी का मुख्य स्रोत बारिस का पानी है।

नदी के ठीक सामने पिछले दस सालों से रह रहे मुन्ना कुमार प्रसाद इस नदी के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए कहते हैं कि इस नदी के हालात शायद हम आम नागरिकों की

लापरवाही है क्योंकि हमने अपने नागरिक होने के कर्तव्यों को नहीं निभाया। जिसका ख़ामियाज़ा आज हमें और हमारे बच्चों को भुगतने पड़ रहे हैं। हालात इतना चिंताजनक हैं की यहाँ साँसे लेना मुश्किल हो गया है। बच्चे बीमार हो रहे हैं। इसके आसपास के इलाके अक्सर महामारी की चपेट में रहते हैं। मुन्ना प्रसाद कहते है कि इस नदी में ११०० से भी अधिक रजिस्टर्ड नाले बहते हैं जो पुरानी सरकारों के कार्य करने की शैली पर सवाल खड़ा करते हैं। हालांकि इन सभी स्थितियों की परवाह न करते हुए उन्होंने इस सिलसिले में समाज के कई आम नागरिकों से सहयोग की अपील की। इस अपील में सौ प्रतिशत तो नहीं फिर भी १० प्रतिशत लोगों ने उनका साथ दिया और पुरज़ोर तरीक़े से इस समस्या के समाधान के लिए निगम के अधिकारियों को अवगत कराकर उचित समाधान के लिए बाध्य किया। आख़िरकर वक्त बदला, आम नागरिकों की यह मुहिम काम आई, दिल्ली में सरकार बदली और सरकार ने मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए इस समस्या को अपने पायलट प्रोजेक्ट में शामिल किया। बर्तमान की दिल्ली सरकार की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी और पीडब्ल्यूडी एवं जल मंत्री प्रवेश वर्मा जी सहित कई उच्च अधिकारियों ने इस नदी की समस्याओं का निरीक्षण कर इसके सफाई अभियान की शुरूवात कर दी है। पीडब्ल्यूडी और एनएचएआई के तत्वाधान में इस प्रोजेक्ट पर तेजी से काम शुरू हो गया है। सरकार ने कहा है कि नदी के किनारे रिवर फ्रंट बनाने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। नदी के किनारे पेड़ पौधे लगाने, लोगों को टहलने और पिकनिक मनाने के लिए कॉरिडोर और सौंदर्यीकरण की व्यवस्था की जा रही है। सरकार ने मेट्रो के पांचवें चरण के निर्माण में नागलोई से नजफगढ़ तक मेट्रो की शुरुआत करने का भी फ़ैसला किया है। जिससे यातायात में होने वाली असुविधा से दिल्ली वालों को राहत मिल सकेगी। देश भर में वर्तमान सरकारें अलग अलग अभियानों के तहत नदियों की स्वच्छता के प्रति कार्यशील हैं, फलस्वरूप कई गैर सरकारी संगठन तथा आम जनता भी जल संरक्षण और नदियों की सफाई के प्रति जागरूक होकर अपने निजी प्रयासों से छोटे छोटे मुहिम चलाकर इसे संरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं।

हम सभी को एक जिम्मेदार नागरिक का दायित्व निभाते हुए ऐसी मुहिम में सशक्त भागीदरी निभानी चाहिए ताकि नदी और जलाशयों को संरक्षित किया जा सके।

घुमन्तु जन जाति का परिचय

घुमन्तु जन जातियाँ जिन्होंने अपने पूरे कला–कौशल के माध्यम से इस देश को संवारा और हमारे मौखिक इतिहास और ज्ञान की समृद्ध परम्परा को एक स्थान से दूसरे स्थान तक बहुत ऊंचाइयों तक पहुँचाया।

धुमन्तु जन जातियाँ इनका कोई स्थायी ठिकाना नही होता, ये एक स्थान से दूसरे स्थान तक चलते ही रहते हैं, ये धर्म, संस्कृति को पुष्ट करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा हो तथा ये देव, देश व धर्म के माध्यम से समाज को एक जून में बांधक रखने वाले लोग है।

घुमन्तु जन जातियाँ व कुछ प्रमुख जातियों के कार्य :

♦ देश में करीब 666 जातियाँ विमुक्त या घुमक्कड़ जातियों की श्रेणी में हैं। इन्हें पिछड़ी जातियों के साथ आरक्षण मिला हुआ है।

♦ भारत में घुमन्तु जातियाँ वे मानी जाती है। जो कभी भी एक स्थान पर नहीं रहती। उदाहरण के तौर पर –

बंजारा – बंजार जिसे 'वनचर' भी कहा जाता हो जिसका अर्थ है। जंगलों में विचरण करना।

बावरिया – बावरिया शब्द बावडी (जल का स्रोत) के कारण अस्तित्व में आया।

गड़िया लुहार – बस्ती या जंगल में कहीं भी घर बनाकर नहीं रहेंगे।

(सोसी, पर, भार, पारधी इत्यादि)

ISSN No. 2581-3528

ओला-वृष्टि जो भूली गई

एक बच्चे का सवाल और दिल्ली-एनसीआर के मौसम में बदलाव

मानस वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

मई 2025 में दिल्ली-एनसीआर की गर्मी के चरम पर पहुंचने पर, मैं उत्तराखंड के अल्मोड़ा में प्रसिद्ध कसार देवी मंदिर देखने गया। इस मंदिर और पहाड़ी क्षेत्र को अपने अंदर कॉस्मिक ऊर्जा संग्रहित करने की वजह से अति प्राचीन है। इसीलिए इसको विश्व के कई नामचीन लोग अपनी आध्यात्मिकता के लिए काफी ध्यान लगाकर आ चुके हैं। खैर, अब जब मैं वहां गया तो उस प्राकृतिक जगह पर काफी सन्नाटा था। लेकिन मौसम कुछ अलग ही इशारा दे रहा था। देखते ही देखते काले बादल घिर आए। फिर तेज आंधी चलने लगी। और अचानक ओलों की बारिश शुरू हो गई। ओले लगातार गिरते रहे। और फिर वाकई वह ओलावृष्टि बर्फबारी जैसी लगने लगी। मई के महीने की ओलावृष्टि में वहां सब कुछ एक बरफ के चादर से ढका हुआ लगा।

दिल्ली लौटकर जब मैंने यह अनुभव एक बच्चे को सुनाया तो उस बच्चे ने मासूमियत से पूछा- “ओले क्या होते हैं?” इस सवाल ने मुझे ठिठका दिया। यह सवाल केवल उस बच्चे की अज्ञानता का नहीं बल्कि बदलते पर्यावरण बदलाव का भी है। इसी बदलते पर्यावरण का असर हमारी नई पीढ़ी पर है जो अब प्राकृतिक अनुभवों से वंचित होती जा रही है। जिस दिल्ली में मानसून में ओले गिरना आम बात थी, वहां अब बच्चों को ओले का नाम तक नहीं पता।

दिल्ली का मौसम आज बहुत बदल गया है। गर्मी का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है। यदि ऐसा ही होता रहा तो आने वाले सालों में दिल्ली का तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाएगा। न तो समय पर बारिश होती है और न ही पहले जैसी मौसम चक्रों की कोई नियमितता बची है। हां मई 2025 में दिया ओलावृष्टि दिल्ली- एनसीआर में हुई थी। जिसमे कई जानें गईं, पेड़ गिरे, उड़ानें बाधित हुईं और जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। लेकिन ये अपवाद था नियम नहीं।

दिल्ली के बच्चों के लिए अब ओलावृष्टि एक किताबों का विषय हो गया है। न सिर्फ मौसम का बदलाव, ओलावृष्टि अब प्रकृति से कटते रिश्ते को दिखाता है। बच्चे अब बारिश में भीग प्राणी जीवन के साथ मिट्टी की महक लेकर आसमान देख पाने के अनुभव से वंचित हो रहे हैं। कसार देवी में ओलों की वह बरसात मेरे लिए एक अलार्म था। कुदरत, अब भी जिंदा है, पर हम उसे महसूस करते भुलाए जा रहे हैं।

मेरी यात्रा झूला देवी मंदिर, रानीखेत तक भी गई। वहां की हरियाली, मंदिर की घंटियों की गूंज और हल्की बारिश का सौंदर्य मुझे एक बार फिर उस प्रकृति की गोद में ले गया जिसे हम शहरों में खो चुके हैं। वहां बच्चों को बारिश में खेलते देखा, जो आज दिल्ली में दुर्लभ दृश्य हो गया है।

जिस तरह से दुनिया के कई हिस्से जलवायु परिवर्तन से प्रभावित हो रहे हैं, बारिश और ओलावृष्टि का अनुभव कर रहे हैं। उसे देखते हुए, अगर हम चाहते हैं कि आने वाले पीढ़ियों का भी बारिश, ओलावृष्टि और मौसम के बदलते रूपों से अवगत रहें, तो इसे लेकर अभी से कुछ कदम उठाने होंगे। सबसे पहला दिल्ली-एनसीआर में हरित क्षेत्र का विकास। पेड़ सिर्फ तापमान ही नहीं, बल्कि वायुमंडल में नमी बढ़ाकर बारिश के लिए प्रेरित करते हैं। दूसरा, जलस्रोतों का संरक्षण और पुनर्जीवन जरूरी है। पुराने तालाब, बावड़ियाँ और नदियाँ जो अब सुख चुकी हैं या अतिक्रमण में खो गई हैं, उन्हें पुनर्जीवित करना होगा ताकि मानसून का असर स्थायी और संतुलित रहे। तीसरा, शहरी योजनाओं में पर्यावरण को प्राथमिकता देना चाहिए। कंक्रीट के जंगलों ने गर्मी बढ़ा दी है और वर्षा के प्राकृतिक चक्र को बिगाड़ दिया है। हरित भवन, सौर ऊर्जा, और पर्यावरणीय अनुकूल निर्माण से हम इस असर को कम कर सकते हैं। हमें चौथा और सबसे महत्वपूर्ण कदम अपने बच्चों को प्रकृति से जोड़ना होगा। इसके लिए हमें स्कूलों में प्रकृति आधारित शिक्षा, महनसून ट्रिप और पर्यावरण कहानियों को लागू करने के लिए एक तरफ प्रकृति के मौसमों को अपने बच्चों को अनुभव करने देना जैसे कदम उठाने होंगे। इसके परिणामस्वरूप उनके अंदर आवश्यकता से ज्यादा जानकारी तो नहीं जाएगी परंतु वह प्रकृति के प्रति संवेदनशील अवश्य बनेंगे।

कसार देवी में हुई यह ओलावृष्टि की मेरी अनुभूति केवल मौसम की घटना नहीं थी; वह एक स्मृति थी- एक संदेश। यह संदेश है- प्रकृति हमेशा समर्थवान है, हमें तो बस फिर से उससे जुड़ना होगा। हम भले ही ओलावृष्टि दिल्ली में मई महीने में न देख पाए, लेकिन क्या हम कम से कम मानसून में भी बारिश की बूंदों से प्रकृति से नहीं जुड़ सकते- अगर चाहें तो? ■

ISSN No. 2581-3528

सामाजिक समरसता और सामाजिक उत्थान के पुरोधा श्री मधुकर दत्तात्रेय देवरस जी

डॉ. शिवा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर – अंग्रेजी विभाग
झम्मन लाल पी.जी. कॉलेज, हसनपुर, अमरोहा

मधुकर दत्तात्रेय देवरस का प्रचलित नाम बालासाहब देवरस था। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तीसरे सर संघचालक (1973–1994) थे। उनका जन्म 11 दिसंबर 1915 को नागपुर में हुआ, लेकिन उनका पैतृक गांव मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले का कारंजा था। उनके पिता नागपुर में एक सरकारी कर्मचारी थे। उनके छोटे भाई भाऊराव देवरस भी आजीवन संघ के प्रचारक रहे और उन्होंने संघ के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वे वर्ष 1927 में अपनी 12 वर्ष की अल्पायु में ही संघ के स्वयंसेवक बन गए थे एवं नागपुर में संघ की एक शाखा में नियमित रूप से जाने लगे तथा इस प्रकार अपना सम्पूर्ण जीवन ही मां भारती की सेवा हेतु संघ को समर्पित कर दिया था। अपने बाल्यकाल में कई बार दलित स्वयंसेवकों को अपने घर ले जाते थे और अपनी माता से उनका परिचय कराते हुए उन्हें अपने घर की रसोई में अपने साथ भोजन कराते थे। इनकी माता भी उनके इस कार्य में उनका उत्साह वर्धन करती थीं। कुशाग्र बुद्धि के कारण आपने शाखा की कार्य प्रणाली को बहुत शीघ्रता से आत्मसात कर लिया था। अल्पायु में ही आप क्रमशः गटनायक, गणशिक्षक, शाखा के मुख्य शिक्षक एवं कार्यवाह आदि के अनुभव प्राप्त करते गए। नागपुर की इतवारी शाखा उन दिनों सबसे कमजोर शाखा मानी जाती थी, किंतु जैसे ही आप उक्त शाखा के कार्यवाह बने, आपने एक वर्ष के अपने कार्यकाल में ही उक्त शाखा को नागपुर की सबसे अग्रणी शाखाओं में शामिल कर लिया था। शाखा में आप स्वयंसेवकों के बीच अनुशासन का पालन बहुत कड़ाई से करवाते थे। दण्ड योग अथवा संचलन में किसी स्वयंसेवक से थोड़ी सी भी गलती होने जाने पर उसे तुरंत पैरों में चपाटा लगता था। परंतु, साथ ही, इनका स्वभाव उतना ही स्नेहमयी भी था, जिसके कारण कोई भी स्वयंसेवक इनसे कभी भी रूष्ट नहीं होता था।

जुलाई, 1931 में बालासाहब ने मैट्रिकुलेशन की पढ़ाई पूरी की और नागपुर के मॉरिस कॉलेज में दाखिला लिया। प्रतिदिन तीन या चार घंटों के लिए कक्षाएं लगती थीं। बालासाहब कक्षाओं के बाद अपना अधिकतम समय संघ को देते थे। वे अपने कॉलेज में बड़ी संख्या में युवाओं तथा उनके दोस्तों से मिला करते थे और उन्हें संघ में आने के लिए प्रेरित करते थे। जैसे–जैसे शाखाओं की संख्या बढ़ी, उन्हें 1932 में मार्तंड मुलमुले और भैयाजी खांडवेकर के साथ इतवारी शाखा को संभालने का कार्य सौंपा गया। छह महीने के भीतर उनको इस शाखा के मुख्य शिक्षक की जिम्मेदारी दी गई। 1935 में बालासाहब ने स्नातक की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने नागपुर में लॉ कॉलेज में दाखिला लिया।

साल 1937 में बी.ए. एल.एल.बी. की पढ़ाई के बाद बालासाहब देवरस नागपुर के नगर कार्यवाह बने। 1939 में उन्हें प्रचारक बनाकर कलकत्ता भेजा गया, लेकिन 1940 डॉ. हेडगेवार के निधन के बाद उन्हें वापस नागपुर बुला लिया गया और नागपुर का प्रांत प्रचारक बनाया गया। क्योंकि, पूरे देश में संघ के कार्य में विस्तार के लिए नागपुर केंद्र का मजबूत होना आवश्यक था, इसलिए संघ के तत्कालीन सरसंघचालक गोलवलकर ने बालासाहब को नागपुर की ही जिम्मेदारी सौंपी। देवरस 1962 में सह–सरकार्यवाह, 1965 में सरकार्यवाह और गोलवलकर के निधन के बाद 1973 में संघ के सरसंघचालक बने।

बालासाहब को जब सरसंघचालक का दायित्व दिया गया, तब वे 58 वर्ष के थे। उन्होंने अथक यात्राएं कीं, आपातकाल में जेल गए और एक कठोर जीवन–शैली को अपनाया। 1974 के मध्य तक बालासाहब राष्ट्रीय स्तर पर एक सर्वाधिक शक्तिशाली बुद्धिजीवी, विवेकपूर्ण और देशभक्तिपूर्ण आवाज के रूप में उभरकर सामने आए। मई, 1974 में बालासाहब ने पुणे स्थित प्रतिष्ठित 'वसंत व्याख्यानमाला' में घोषणा की, ''छुआछूत एक अभिशाप है। इसे यहां से पूरी तरह जाना होगा।'' उन्होंने अब्राहम लिंकन को उद्धृत करते हुए कहा, –''लिंकन से कहा था, अगर गुलामी अनैतिक या गलत नहीं है, तो फिर कुछ भी गलत नहीं है। हमें भी कहना चाहिए, अगर छुआछूत गलत नहीं है, तो फिर कुछ भी गलत नहीं है।'

ISSN No. 2581-3528

जाति-आधारित भेदभाव से लड़ना : बालासाहेब ने एक बार अपनी माँ से कहा था, 'आरएसएस के मेंरे मित्र हमारे घर भोजन के लिए आएंगे। लेकिन मैं चाहता हूँ कि उनके साथ मेरे जैसा ही व्यवहार हो, चाहे उनकी जाति कुछ भी हो। उन्होंने उन्हीं बर्तनों में खाना परोसा जाए जिनमें परिवार के अन्य सदस्यों को खाना परोसा जाता है। मैं जाति के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं चाहता।'

उनकी माँ मान गई और तब से देवरस परिवार में उनके घर आने और भोजन करने वाले स्वयंसेवकों की जाति के बारे में कोई सवाल नहीं पूछा जाता था। उस दौर में, जब जाति–आधारित भेदभाव व्याप्त था, देश में यह एक असामान्य प्रथा थी।

जाति–आधारित भेदभाव को समाप्त करने और एक न्यायपूर्ण एवं समतापूर्ण समाज की स्थापना का यह संकल्प बालासाहेब के ह्रदय में सदैव बना रहा। सरसंघचालक बनने के तुरंत बाद, 8 मई 1974 को वसंत व्याख्यानमाला में व्याख्यान देते हुए उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, 'हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि अस्पृश्यता एक गंभीर भूल है और हमें इसे पूरी तरह से समाप्त करना होगा।'

संघ में गीतों की प्रथा उन्होंने ही शुरू की। प्रारंभ में संघ के विजयादशमी व शस्त्रपूजन उत्सव में तीन गीत गाये गये। उसका परिणाम स्वयंसेवकों व आमंत्रित सज्जनों पर बहुत ही प्रभावी रहा। तब से संघ कार्यक्रमों गीत गाने का क्रम अनवरत रूप से चल पड़ा। उनका मानना था– गीत गाने में सरल और सुबोध हों ताकि वह सबको कंठस्थ हो सके।

इतवारी के शाखा कार्यवाह से लेकर विभिन्न दायित्वों का निर्वहन: जब वे नागपुर की इतवारी शाखा के कार्यवाह थे। तब उनकी शाखा युवकों के चैतन्य व कर्तृत्व का प्रत्यक्ष प्रमाण थी। उनके नेतृत्व में शाखा में नित नये कार्यक्रमों का आयोजन होता था। शाखा क्षेत्र में रहने वाले प्रत्येक परिवार से संजीव संपर्क रखना, उन्हें संघ से परिचित कराना और वार्षिकोत्सव कर उसमें सबको निमंत्रित करना उन्होंने ही प्रारंभ किया था। इस पद्धति का अनुकरण बाद में नागपुर की अन्य शाखाओं ने भी किया।

संघ शाखा में सीखी प्रत्येक बात को वह अपने व्यवहार में भी उतारते थे। समरसता और समता के सीखे पाठ को उन्होंने अपने जीवन में भी उतारा और उसका प्रारंभ भी अपने घर से किया। उस काल की कल्पना की जा सकती है कि जब लोग सामान्य संबंध भी जाति पूछ कर ही रखा करते थें। बालासाहब के घर जब उनके स्वयंसेवक मित्रों की टोली आती थी, उसमें सब जाति और वर्ग के मित्र हुआ करते थे और बिना किसी भेदभाव के सबके साथ समान व्यवहार होता था।

यह कथन आरएसएस के इतिहास में मील के पत्थरों में से एक माना जाता है क्योंकि इसने संगठन को जाति– आधारित भेदभाव के दानव से नए जोश के साथ लड़ने के लिए प्रेरित किया। सरसंघचालक के रूप में अपने 21 साल के कार्यकाल के दौरान, बालासाहेब ने जाति–आधारित भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ अथक अभियान चलाया। यह बालासाहेब के व्यक्तित्व की एक विशेषता को भी दर्शाता है –कि वे यथास्थिति को चुनौती देने में विश्वास करते थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के तृतीय सरसंघचालक श्री मधुकर दत्तात्रेय देवरस उपाख्य बालासाहब देवरस 'सामाजिक समरसता और सेवाकार्यों द्वारा सामाजिक उत्थान' के पुरोधा के रूप में जाने जाते हैं। बाल्यकाल से जीवन के अंतिम क्षण समाज में फैले कुरीतियों, विषमताओं और अभावों को दूर करने के लिए उन्होंने अनेक योजनाएं बनाईं। उन योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए लोकशक्ति का निर्माण किया, समाज का प्रबोधन किया। यही कारण है कि बालासाहब समरसता के संवाहक माने जाते हैं। 1974 में पुणे में आयोजित 'वसंत व्याख्यानमाला' में उन्होंने हिन्दू समाज में समरसता लाने और विषमता को दूर करने के लिए जो बातें कही थी, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा था– 'हम सभी के मन में सामाजिक विषमता के उन्मूलन का ध्येय अवश्य होना चाहिए। हमें लोगों के सामने यह स्पष्ट रूप से रखना चाहिए कि विषमता के कारण हमारे समाज में किस प्रकार दुर्बलता आई और उसका विघटन हुआ। उसे दूर करने के उपाय बतलाने चाहिए तथा इस प्रयास में हर एक व्यक्ति को अपना योगदान देना चाहिए।'

श्री देवरस जी ने कई पुस्तकें लिखी, जिनमें कुछ पुस्तकें बहुत लोकप्रिय हुई है, जैसे वर्ष 1974 में 'सामाजिक समानता और हिंदू सुढ़ीकरण' विषय पर लिखी गई पुस्तक; वर्ष 1984 में लिखित पुस्तक 'पंजाब समस्या और उसका समाधान'; वर्ष 1997 में लिखित पुस्तक 'हिंद संगठन और सत्तावादी राजनीति' एवं वर्ष 1975 में अंग्रेजी भाषा में लिखी गई पुस्तक 'राउजः द पॉवर आफ गुड़' ने भी बहुत ख्याति अर्जित की है।

मधुमेह रोग के बावजूद 1994 तक सरसंघचालक के रूप में उन्होंने दायित्व निभाया। जब उनका शरीर प्रवास योग्य नहीं रहा, तब उन्होंने प्रमुख कार्यकर्ताओं से परामर्श कर यह दायित्व श्री रज्जू भैया को सौंप कर पद त्याग का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। इतना ही नहीं सन 1996 में अपना शरीर छोड़ने के पूर्व ही उन्होंने निर्देश दिया कि उनका दाह संस्कार सामान्य व्यक्ति की भांति सार्वजनिक स्थल पर किया जाए। इसके पीछे उद्देश्य था कि उनकी स्मृति में किसी स्मारक का निर्माण न हो। अपने जीवित रहते हुए ही उन्होंने जो पत्र लिखा था उसमें दो बातें प्रमुख थीं। एक कि उनके नाम पर कहीं भी स्मारक का निर्माण न कराया जाए और दूसरा यह कि आद्य सरसंघचालक डॉ. हेडगेवार और द्वितीय सरसंघचालक गुरुजी के अलावा अन्य किसी सरसंघचालक का चित्र नहीं लगाया जाएगा।

17 जून, 1996 में बालासाहब इस संसार से विदा हो गए। उनकी इच्छानुसार उनका दाहसंस्कार रेशिमबाग की बजाय नागपुर में सामान्य नागरिकों के शमशान घाट में किया गया। ■

ISSN No. 2581-3528

कुटुंब प्रबोधन की अनूठी मिसाल जनपद हापुड़ का लुहारी गांव

हमारा भारत देश विभिन्न जाति, धर्म व समुदायों का देश होते हुए भी अनेकता में एकता, भारत के चरित्र का एक अद्भुत हिस्सा है। जिसमें न केवल भारत के लोगों को एक कुटुंब की दृष्टि से देखा है बल्कि विश्व के विभिन्न देशों को भी भ्रातृत्व की दृष्टि से एक धागे में पिरोने की कोशिश करता है। कुटुंब प्रबोधन की शुरुआत एक खुश और स्वस्थ परिवार से होती है। यदि परिवार खुश होंगे तो समाज खुश होगा समाज खुश होगा तो खुश और उत्कृष्ट राष्ट्र का उदय होगा। पर इस आधुनिक युग में भारत में एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है, परिवारों में मनमुटाव व बिखराव आ रहे हैं। इस आधुनिक युग की चकाचौंध में परिवारों के विघटन के बावजूद भी हमारे समाज में कुछ परिवार ऐसे भी हैं जो अपने परिवार को एकता के धागे में पिरोए हुए हैं और समाज को एक संयुक्तता की मिसाल प्रस्तुत कर रहे हैं जिसका जीता जागता उदाहरण है हापुड़ जनपद का लुहारी गांव। पंच परिवर्तन के सबसे महत्वपूर्ण अंग कुटुंब प्रबोधन के विषय पर डॉ. कामनी चौहान द्वारा प्रोफेसर अजय पाल सिंह भूगोल विभाग किसान पीजी कॉलेज, सिंभावली, हापुड़ से लिए गए साक्षात्कार के कुछ अंश आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।

लुहारी गांव की क्या विशेषताएं हैं? अपने साक्षात्कार में प्रो. अजय पाल सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश के हापुड़ जनपद में गढ़मुक्तेश्वर तहसील की ग्राम पंचायत का लुहारी गांव जिसकी आबादी लगभग 10000 व्यक्ति है। तथा लगभग 4500 वोटिंग वाला गांव है। यह एक प्राचीन और मिश्रित आबादी वाला गांव है जिसमें मुख्यतः दो समुदाय एवं विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं जिसमें मुख्यतः जाट, हरिजन, कुम्हार, चौहान, ब्राह्मण, वैश्य आदि जातियों के लोग रहते हैं। विभिन्न जाति धर्म के लोगों के बावजूद भी यहां के लोग बड़े प्रेम भाव व सौहार्द के साथ रहते हैं। यह गांव जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर तथा विकासखंड से लगभग 7 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गंगा जमुना दोआब में गंगा नदी से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसी लुहारी गांव में श्री लीलापत प्रजापति जी का संयुक्त परिवार है जो चार पीढ़ियों से एक साथ संयुक्त परिवार में रह रहा है।

डॉ. कामनी चौहान झम्मनलाल पीजी कॉलेज, हसनपुर, अमरोहा	प्रो. अजय पाल सिंह भूगोल विभाग किसान पीजी कॉलेज, सिंभावली, हापुड़

आपका परिवार कितनी पीढ़ियों से एक साथ रह रहा है?

उन्होंने बताया कि उनका परिवार चार पीढ़ियों से एक साथ रह रहा है और उनका परिवार 25 सदस्यों का एक संयुक्त परिवार है! जिसमें वह पांच भाई एक ही परिसर में रहते हैं। उनकी चार पीढ़ियां जो एक संयुक्त परिवार के रूप में रहती आई हैं वह हैं श्री कुलवंत सिंह जी (परदादा), श्री भोदत्त सिंह एवं सोहनलाल जी (दादा), लीलापत प्रजापति पत्नी मामकौर (माता–पिता) उनके बड़े भाई मदन पाल सिंह पत्नी मंजू देवी, उनके बच्चे सुधीर कुमार पत्नी कोमल (माही जय), इंदु, योगिता, अंशु ,प्रणिता, जीकेश, हैं। उनके दूसरे भाई चमन लाल जी पत्नी बबीता देवी वह बच्चे नैंसी, लक्ष्य हैं। उनके तीसरे भाई अमन पाल जी पत्नी मुकेश देवी वह बच्चे हितेश कुमार पत्नी प्रिया (अनामिका) आंचल, वर्षा हैं। उनके चौथे भाई यशपालजी पत्नी सुमन देवी व बच्चे सौरभ और आकांशा हैं। व पांचवें पुत्र श्री अजय पाल जी पत्नी कविता देवी व बच्चे अर्पणा, सिद्धार्थ है।

आपका या आपके पिताजी का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से क्या संबंध है?

उन्होंने बताया कि उनके पिताजी लंबे समय से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़कर राष्ट्र को अपनी सेवाएं दे रहे हैं!

क्या कुटुंब प्रबोधन का सामाजिक जीवन पर कोई प्रभाव पड़ता है? –इसके उत्तर में उन्होंने बताया कि परिवार समाज की

प्रथम संस्था है! किसी भी व्यक्ति की समाज में पहचान उसके परिवार से होती है यदि परिवार संयुक्त है और परिवार के सभी सदस्य सामंजस्य के साथ रह रहे हैं तो वह परिवार समाज के लिए मिसाल का काम करता है!

संयुक्त परिवार के क्या लाभ है ?

उन्होंने बताया अगर संयुक्त परिवार है और परिवार में कोई विपत्ति आ जाती है तो ऐसे समय में सभी परिवार के सदस्य मिलकर उस समस्या को सुलझा लेते हैं। उदाहरण के तौर पर उन्होंने बताया कि उनके मझले भाई की पत्नी का स्वर्गवास हो गया था अगर एकल परिवार होता तो बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता पर संयुक्त परिवार के कारण बच्चों की देखभाल व पालन पोषण में कोई परेशानी नहीं आई ऐसे उदाहरण से समाज को एक सीख मिलती है और परिवार में मिलजुल कर एक साथ रहने की प्रेरणा मिलती है।

आप संयुक्त परिवार में त्यौहार कैसे मनाते हैं?

उन्होंने बताया कि उन्होंने अपने घर के परिसर में उनके पूर्वजों के काल से ही एक मंदिर स्थापित कर रखा है। जिसमें वे सुबह की पूजा के साथ ही अपने दिन की शुरुआत करते हैं जब किसी त्योहार पर पूजा होती है तो संयुक्त परिवार में मंदिर में पूजा का कार्यक्रम बहुत सुबह से शुरू कर दिया जाता है जिससे पूरे परिवार को पूजा करने का समय मिल सके जैसे नवरात्रों में पूरा परिवार व्रत रखता है तब तो सुबह 6:00 से ही पूजा शुरू हो जाती है ऐसे ही जब अन्य त्योहारों पर जैसे होली, दीपावली पर पूजा अर्चना होती है तब परिवार में बहुत उल्लास का माहौल होता है। उन्होंने बताया कि हम सब भाई जब शाम को अपने-अपने कार्यों से निवृत होकर घर पहुंचते हैं तो रात्रि भोज सभी साथ में करते हैं जिससे पूरे दिन की दिनचर्या का तथा आगे की योजनाओं पर चर्चा होती है । जिससे भाइयों में भी प्रेम व स्नेह बना रहता है तथा बच्चे भी अच्छे संस्कार सीखते हैं।

हमने सुना है ,कि आपके गांव में रामलीला का मंचन होता है उसके बारे में विस्तार से बताइए।

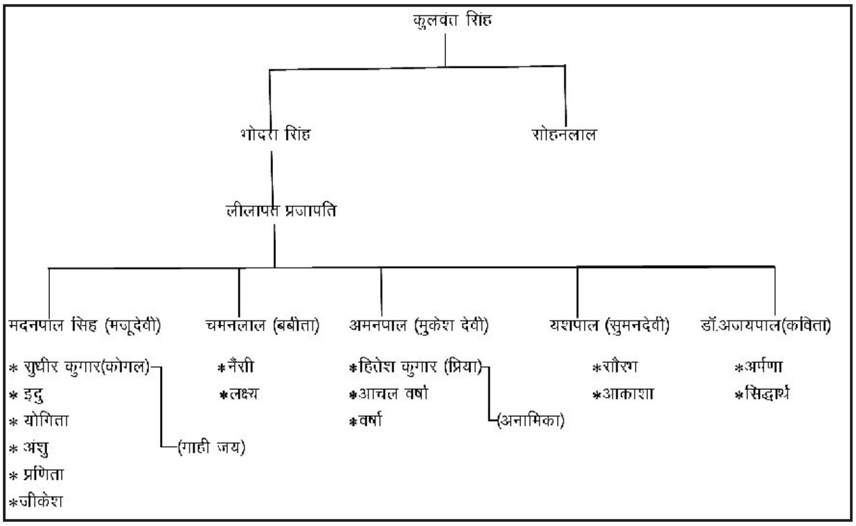

इसके उत्तर में उन्होंने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि बच्चों को आध्यात्मिक संस्कारों से व अपनी संस्कृति से जोड़ने के लिए हर साल हमारे गांव में रामलीला मंचन कराया जाता है। और गांव का कोई भी व्यक्ति इस रामलीला में जो चरित्र का अभिनय करना चाहता है अपनी इच्छा अनुसार कर सकता है। जिसमें जो पात्र अभिनय करते हैं वह गांव के ही होते हैं और सबसे अधिक जो रोचक बात यह है कि इस रामलीला का मंचन दिन में होता है। और मंचन के समय जो संवाद व युद्ध होते हैं वह मंच पर न होकर 10 बीघा के मैदान में घूम-घूम कर होते हैं जो बिल्कुल वास्तविक रामलीला का आभास कराते हैं। उन्होंने बताया कि यह मंचन बिल्कुल साधारण ढंग से होता है और गांव में इसे एक सकारात्मक ऊर्जा का विकास होता है। बच्चे भी अलग-अलग रामायण के चरित्रो के माध्यम से संस्कारवान व आज्ञाकारी बनते हैं जो संयुक्त परिवार के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है।

क्या आपने या आपके परिवार में किसी ने रामलीला में प्रतिभाग किया है

उन्होंने बताया कि रामलीला में उनके परिवार का प्रतिभाग रहता है जिसमें रावण के पुत्र अक्षय कुमार और नारायणनतक का अभिनय उनके मझले भाई अमन पाल सिंह जी करते हैं।

संयुक्त परिवार के विघटन का मुख्य कारण क्या है?

उन्होंने बताया कि संवादहीनता परिवार के विघटन का मुख्य कारण है यदि आप परिवार में बैठकर सभी मुद्दों पर चर्चा नहीं करेंगे तो एक दूसरे की मन में कुछ ना कुछ घुटन बाकी रहेगी क्योंकि आपसी बातचीत से सभी समस्याएं निशतारित हो जाती हैं। किंतु यदि परिवार में संवादहीनता होती है या एक दूसरे से कम बातचीत होती हैं तो रिश्तों में दूरियां बढ़ती जाती हैं अंततः परिवारों का विघटन हो जाता है।

क्या हम पुनः संयुक्त परिवार की तरफ लौट सकते हैं?

उन्होंने बताया कि यदि परिवार में पहले से ही बच्चों में अच्छे संस्कार, परिवार के प्रति सर्मपण की भावना जागृत की जाए तो हम दोबारा से संयुक्त परिवार की तरफ लौट सकते हैं। उन्होंने बताया कि संयुक्त परिवार के लिए पारस्परिक सम्मान व व्यक्तिगत स्थान भी जरूरी है जिससे परिवार का हर सदस्य सुरक्षित और सहज महसूस करें। घर की जिम्मेदारियां को सभी सदस्यों के बीच साझा करना चाहिए। एक दूसरे की मदद करना और संकट के समय में साथ देना महत्वपूर्ण है जिससे पारिवारिक रिश्ते मजबूत होते हैं। संयुक्त परिवार में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होता है सहनशीलता और धैर्य क्योंकि परिवार में विभिन्न व्यक्तित्व के सदस्य होते हैं कुछ सरल स्वभाव के तथा कुछ कठोर स्वभाव के इन सब के बीच किस तरह से सामंजस्य लाना है यह संयुक्त परिवार के लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हम संयुक्त परिवार में शांति और सौहार्द बनाए रखने में सफल हो सकते हैं। ■

ISSN No. 2581-3528

स्वतंत्रता आन्दोलन के नायकों से परिचित कराता हिंदी सिनेमा

डॉ. सुनील कुमार मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर, विवेकानंद इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, नई दिल्ली

हिन्दी सिनेमा में देशभक्ति एक बड़ा सन्दर्भ रहा है। स्वतंत्रता के सात दशक बीत जाने के बाद भी देशभक्ति से सराबोर फिल्में एक अपनापन का एहसास कराती है, स्वतंत्रता की कीमत बताती हैं, शहीद हुए नायकों के बलिदान से परिचित कराती हैं, साथ ही भारत माता के वीर सपूतों के त्याग, बलिदान, और शौर्य गाथा को जन–जन तक पहुँचाती हैं। देशभक्ति को केंद्र में रखकर बुनी कहानी, गाने, एवं संवाद भारतीय स्वतंत्रता की पटकथा लिखने वाले उन नायकों को हमारे बीच जिन्दा रखने का कार्य करतीं हैं जिन्होंने आजाद भारत का सपना देखा और इस सपने को पूरा करने के लिए न सिर्फ खुद लड़े अपितु एक जन आन्दोलन खड़ा करने का कार्य किया। हिन्दी सिनेमा में स्वतंत्रता आन्दोलन के नायकों का चित्रण करते समय यूँ तो मुख्य नायक के आस–पास ही कहानी घूमती है परन्तु समकालीन नायकों के चरित्र चित्रण को भी ऐतिहासिक सन्दर्भों के साथ प्रस्तुत किया गया है। झाँसी की रानी, मंगल पाण्डेय, शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, एवं सरदार पटेल जैसे नायकों को हिन्दी सिनेमा जगत ने कई बार रूपहले पर्दे पर उतारा है। भारतीय स्वतंत्रता की पटकथा लिखने वाले अनगिनत वीरों की कहानियां रूपहले पर्दे पर दिखाई जा चुकी हैं। इन कहानियों के प्रति बाजार का दृष्टिकोण जो भी रहा हो, आम जनमानस के दिलों में स्वतंत्रता आन्दोलन के नायकों की छवि को स्थापित करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका दिखलाई देतीं है। स्वतंत्रता आन्दोलन के नायकों से जुड़ी कहानियों को सिनेमा द्वारा जन–जन तक पहुँचाने के साथ ही उन ऐतिहासिक दस्तावेजों से वर्तमान पीढ़ी को परिचित कराने का कार्य किया गया है। देखा जाय तो भारतीय स्वतंत्रता के तुरंत बाद से ही स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े कथानकों पर हिन्दी सिनेमा न सिर्फ मुखर दिखता है अपितु इससे जुड़े विषय को भी स्वतन्त्र रूप में प्रस्तुत करता है। आजादी के 78 वर्ष बाद भी स्वतंत्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि को केंद्र में रखकर फिल्में बन रही हैं, एवं आज भी यह विषय न सिर्फ फिल्म निर्माताओं को अपनी तरफ खींचता है अपितु भारतीय जनमानस में आज़ादी के संघर्षों से जुड़ी मुख्य घटनाओं से जुड़ी सूचनाओं का संचार भी करता है। हिन्दी सिनेमा ने भारतीय स्वतंत्रता के जिन प्रमुख नायकों का फ़िल्मी पर्दे पर चित्रण किया है उनमें मुख्यतः प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन के नायक मंगल पाण्डेय हैं तो वहीं अंग्रेजी हुकूमत से टकरा जाने वाली झाँसी की रानी भी हैं। देश को आजाद कराने के लिए हँसते–हँसते फांसी के फंदे को गले लगाने वाले अमर शहीद भगत सिंह हैं तो वहीं अंग्रेजी सैन्य टुकड़ी से अकेले ही लड़ने वाले चंद्रशेखर आजाद का रूपहले पर्दे पर चित्रण भी है। अपनी सैन्य ताकत का ब्रिटिश हुकूमत को एहसास कराने वाले सुभाषचंद्र बोस से जुड़ी फिल्म है तो वहीं अंग्रेजी सरकार के शोषणकारी नीतियों के खिलाफ आवाज़ बुलन्द करने वाले महात्मा गांधी का चित्रण भी है।

भारतीय स्वतंत्रता के नायकों की जब भी बात होगी, अमर शहीद भगत सिंह की बात अवश्य होगी। शहीद भगत सिंह का व्यक्तित्व न सिर्फ भारतीय जनमानस में क्रांति का 'इंकलाब' पैदा करता है अपितु फिल्मकारों का ध्यान भी खींचता है। यही वजह है कि बड़े पर्दे पर उनकी कहानी हमेशा ही प्रासंगिक रही है। वर्ष 2002 में उनके जीवन पर आधारित तीन फ़िल्में '23 मार्च 1931 शहीद' 'शहीद ए आजम' एवं 'द लीजेंड ऑफ भगत सिंह' प्रदर्शित हुई थी। इसके अतिरिक्त अमर शहीद भगत सिंह से जुड़ी कहानी को हिन्दी सिनेमा में कई बार प्रस्तुत किया गया है। वर्ष 1965 में प्रदर्शित फिल्म 'शहीद' हो या फिर 'द लीजेंड ऑफ भगत सिंह', दोनों ही फिल्में भारतीय स्वतंत्रता के आधार स्तम्भ में सम्मिलित उस मजबूत किरदार को प्रस्तुत करतीं हैं जो आज भी प्रेरणा का संचार करतीं हैं। मातृभूमि पर सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा देतीं हैं तो अमर बलिदान की गाथा को भारतीय मानस में अमर कर जातीं हैं। भगत सिंह के जीवन पर बनी यह देशभक्ति की सर्वश्रेष्ठ फिल्म थी। जिसकी कहानी स्वयं भगत सिंह के साथी बटुकेश्वर दत्त ने लिखी थी। इस फिल्म में अमर शहीद राम प्रसाद 'बिस्मिल' के गीत थे। मनोज कुमार ने इस फिल्म में भगत सिंह का जीवन्त अभिनय किया था। वर्ष 2002 में भगत सिंह के जीवन पर कई फिल्मों का निर्माण हुआ जिनमें एकमात्र उल्लेखनीय

राजकुमार संतोषी निर्देशित 'द लीजेंड ऑफ भगत सिंह' है जिसमें अजय देवगन को शीर्षक भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया गया था। यह फिल्म मनोज कुमार के 'शहीद' की अपेक्षा तथ्यात्मक ढंग से अधिक पुष्ट और यथार्थ के नजदीक थी। लेकिन इसमें मनोज कुमार की 'शहीद' जैसा न रागात्मक ताप था और न गीतों की झंकृति। फिल्म 'द लीजेंड ऑफ भगत सिंह' की सबसे बड़ी विशेषता समकालीन सभी स्वतंत्रता सेनानियों का चरित्र चित्रण प्रस्तुत करना है। इस फिल्म में भगत सिंह के साथ ही राजगुरु, सुखदेव, एवं चंद्रशेखर आजाद की वीरगाथा को भी दमदार तरीके से प्रस्तुत किया है जिससे यह फिल्म सिर्फ भगत सिंह की फिल्म न होकर उस समय के सभी महान क्रांतिकारियों के बलिदान को भारतीय जनमानस तक पहुँचाने में सफल दिखती है। फिल्म में भगत सिंह जी के पारिवारिक पृष्ठभूमि से लेकर गांधी विचार धारा के प्रति झुकाव रखने वाले एक बालक का क्रान्तिकारी बनना एवं देश की आजादी के लिए अपने साथियों के साथ अंग्रेजों से लड़ते हुए फांसी के फंदे को गले लगा लेना देश प्रेम की भावना को प्रबल कर देता है। फिल्म का गाना 'देश मेरे देश' न सिर्फ कर्णप्रिय है अपितु कहानी को आगे बढ़ाने के साथ देशभक्ति का भाव पैदा करता है। 'जलियांवाला बाग' एवं 'काकोरी कांड' एवं 'जॉन सांडर्स' हत्या कांड को तथ्यपरक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 23 मार्च, 1931 के दिन आजादी के महान नायकों की फांसी, गांधी जी का मौन, देश में क्रांति की अग्नि का प्रज्वलन, लाला लाजपत राय की हत्या जैसी घटनाओं को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना झाँसी की रानी को केंद्र में रखकर मुख्यतः दो फ़िल्में आई हैं, 1953 में प्रदर्शित 'झाँसी की रानी' एवं 2019 में प्रदर्शित 'मणिकर्णिका' 100 करोड़ से अधिक बजट की फिल्म मणिकर्णिका में भी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी झाँसी की रानी की कहानी को बड़े पर्दे पर प्रस्तुत किया गया है। कंगना रनौत की मुख्य भूमिका वाली यह फिल्म सफल रही, साथ ही कंगना रनौत को इस फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। इस फिल्म में मुख्य किरदार को बहुत ही दमदार तरीके से प्रस्तुत किया गया है जो सोहराब मोदी की फिल्म में कम दिखता है। सोहराब मोदी की फिल्म 'झाँसी की रानी' एक साधारण सी बालिका मनु के झाँसी की रानी बनने की कहानी है। फिल्म के शुरुआत एवं अन्त में प्रयुक्त 'अमर है झाँसी की रानी...' गाना फिल्म की आत्मा है जो भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए झाँसी की रानी के त्याग एवं संघर्ष को प्रस्तुत करता है। पहले ही दृश्य में निर्देशक ने झाँसी राज्य की वस्तुस्थिति को स्पष्ट कर दिया है। फिल्म में राज्य के राजगुरु की भूमिका प्रभावी लगती है जिसके बिना फिल्म आगे नहीं बढ़ती। पूरी फिल्म मुख्य किरदार के आस–पास घूमती रहती है। फिल्म में राजा 'गंगाधर राव' के साथ ही उनके करीबी रिश्तेदार 'सदाशिव'का चरित्र चित्रण भी है। लगभग आधी फिल्म मुख्य किरदार को स्थापित करने एवं झाँसी की तत्कालीन परिस्थिति पर प्रकाश डालने में ही बीत जाती है। संवादों में उर्दू भाषा की अधिकता दिखती है जो हिन्दू धर्म की पृष्ठभूमि वाली रानी पर नहीं जंचता है। झाँसी के राजकुमार एवं राजा की मृत्यु के बाद दत्तक पुत्र को राजकुमार के रूप में न ही ब्रिटिश हुकूमत की मान्यता मिलती है और न ही राजा के करीबी रिश्तेदार ही इससे सहमत होते हैं। अंग्रेजों के खिलाफ मंगल पाण्डेय द्वारा किये गये विद्रोह के समय भी रानी को धर्मसंकट में फँसा दिखाया गया है जो रानी के ओज को कम करता है। हालाँकि निर्देशक ने रानी के अदम्य साहस एवं बलिदान को प्रस्तुत करने की कोशिश किया है। कुल मिलाकर फिल्म झाँसी की रानी को स्थापित करने के साथ ही उनके बलिदान को अमर कर जाती है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवनवृत्त को केंद्र में रखकर बॉलीवुड में कई महत्वपूर्ण फ़िल्में बनी हैं। कुछ फिल्मों में गांधी के विचार को प्रमुखता दी गई है तो कुछ फिल्मों में गांधी की हत्या को पृष्ठभूमि में रखकर कहानी को बड़े पर्दे पर दिखाया गया है। इन फिल्मों में फिरोज मस्तान अब्बास की 'गांधी माय फादर' राजकुमार हिरानी की 'लगे रहो मुन्ना भाई' श्याम बेनेगल की 'द मेकिंग ऑफ़ गांधी' एवं जॉन बरुआ की 'मैंने गांधी को नहीं मारा' जैसी फ़िल्में शामिल हैं। समकालीन स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन पर आधारित फिल्मों में भी 'गांधी' को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। 1982 में प्रदर्शित 'रिचर्ड एटनबरो' की फिल्म 'गांधी' एक नवयुवक के महात्मा गांधी बनने की एवं भारतीय स्वाधीनता के लिए ब्रिटिश हुकूमत से लड़ने की कहानी है। 'बेन किंग्सले' अभिनीत यह फिल्म गांधी के जीवन पर बनी अब तक की सबसे लोकप्रिय फिल्म रही है। यह फिल्म गांधी के दक्षिण अफ्रीका में संघर्ष को दिखाने के साथ ही भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ी अनेकों ऐतिहासिक दस्तावेजों को रखती है। गांधी के जीवन दर्शन के साथ ही यह फिल्म उनके पारिवारिक जीवन, राजनैतिक जीवन, पत्रकारिता एवं सामाजिक जीवन, राष्ट्र के सर्वमान्य नेता के रूप में स्थापित होते गांधी के साथ ही तत्कालीन परिवेश में असहाय गांधी को दर्शाती है। यह फिल्म गांधी के आदर्शों को प्रस्तुत करने के साथ ही उनकी अहिंसावादी नीतियों पर भी प्रकाश डालती है। लेखक एवं निर्देशक ने ऐतिहासिक तथ्यों के साथ छेड़छाड़ नहीं किया है जो इस फिल्म की सबसे महत्वपूर्ण बात है। आमतौर पर सिनेमाई चरित्र चित्रण के दौरान नाटकीय परिवर्तन देखने को मिलता है परन्तु पहले दृश्य में गांधी जी की हत्या से लेकर, कहानी के फ़्लैशबैक में उनकी दक्षिण अफ्रीका की जीवन यात्रा, एवं 1915 से 1948 के बीच

उनके भारतीय स्वाधीनता की गाथा को प्रस्तुत करती है। इस फिल्म में बापू की पत्नी कस्तूरबा का चित्रण बखूबी किया गया है। भारत को जानने के लिए भारत के विभिन्न स्थानों पर उनके भ्रमण, चम्पारण की यात्रा के जरिये निर्देशक ने उस समय के भारत को दर्शाने के साथ हीं उससे व्यथित होते गांधी को दिखाया है। आजादी के बाद बंटवारे से उपजी परिस्थितियों पर गांधी की विवशता को भी दिखाया गया है। कुल मिलाकर यह फिल्म गांधी को एक नायक के रूप में प्रस्तुत करती है।

भारतीय आजादी के नायकों में सुभाषचंद्र बोस का नाम भी अमर है। यह एक ऐसा नाम है जिसने न सिर्फ भारतीय जनमानस में आजादी की अलख जगाने का कार्य किया अपितु विदेश में भारतीय स्वतंत्रता के प्रति आन्दोलन खड़ा किया। आजाद हिन्द फौज के गठन की बात हो या फिर आजाद हिन्द सरकार का मार्ग प्रशस्त करने की बात, नेताजी का भारत की आजादी के लिए त्याग न सिर्फ हमें प्रेरित करता है अपितु भारत माता के इस अमर सपूत को अमर बनाता है। नेताजी के जीवन को केंद्र में रखकर हिन्दी सिनेमा जगत की 3 महत्वपूर्ण फिल्में आई हैं। वर्ष 2005 में प्रदर्शित श्याम बेनेगल की फिल्म 'सुभाषचंद्र बोस : द फॉरगॉटेन हीरो', 2016 में प्रदर्शित इक़बाल मल्होत्रा की फिल्म 'सुभाषचन्द्र बोस : द मिस्ट्री' एवं वर्ष 2017 में ओ टी टी प्लेटफार्म 'अल्ट बालाजी' पर प्रदर्शित राजकुमार राव अभिनीत फिल्म 'बोस : डेड–अलाइव' नेताजी के जीवन यात्रा को बताती है। सुभाषचंद्र बोस : द फॉरगॉटेन हीरो' में सचिन खेडेकर द्वारा मुख्य भूमिका निभाई गई है या यूँ कहें की सचिन ने नेताजी के किरदार को जीया है। 'सुभाषचंद्र बोस : द फॉरगॉटेन हीरो' नेताजी के जीवन पर बनने वाली सबसे महत्वपूर्ण फिल्म है जो नेताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालती है एवं आजाद भारत के नायक के बलिदान को हमारे सामने लाने का सफल प्रयास करती है। निर्देशक पहले ही स्पष्ट कर देता है कि यह काल्पनिक फिल्म ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। फिल्म की शुरुआत गांधी जी एवं नेताजी के बीच वार्तालाप से शुरू होती है। पहले ही दृश्य में निर्देशक ने नेताजी के स्वतंत्रता आन्दोलन के लक्ष्य एवं रास्ते को स्पष्ट कर दिया है। इस दृश्य में ही नेताजी के क्रांति का मार्ग एवं महात्मा गांधी के अहिंसा के मार्ग की दिशा भी स्पष्ट हो जाती है। फिल्म के आरम्भिक दृश्यों में ही नेताजी एवं अंग्रेजी सरकार के बीच छत्तीस के आकड़े, नेताजी की पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं भारत को आजाद करने के लिए नेताजी द्वारा एक फ़ौज के गठन की योजना मूर्तरूप लेती है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीत एकला चलो रे की चासनी में लिपटा पृष्ठभूमि में चल रहा गाना 'तन्हा राही अपनी राह चलता जायेगा..' नेताजी की यात्रा को आधार प्रदान करता है।

देश के बाहर रहकर भारत की आजादी के लिए 'आजाद हिन्द फौज' के गठन एवं इस फौज के साथ भारतीय स्वतंत्रता की बुनियाद रखने वाले नेताजी आजाद हिन्द सरकार की भी बुनियाद रखते हैं जिसे कई देश मान्यता देते हैं। फिल्म, सुभाष चन्द्र बोस के त्याग एवं बलिदान को बड़े पर्दे पर प्रस्तुत करने के साथ ही देश के प्रति उनके प्रेम, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय जननायक एवं अंग्रेजी हुकूमत के सबसे बड़े सिरदर्द के रूप में प्रस्तुत करती है। पूरी फिल्म में नेताजी अंग्रेजी हुकूमत से दो कदम आगे दिखते हैं जिसे ऐतिहासिक घटनाएँ पुष्ट करती हैं। फिल्म में नेताजी की नेतृत्व क्षमता, उनके बौद्धिक कौशल, एवं वाक–पटुता पर भी प्रकाश डाला गया है। फिल्म 'एक भारत' की संकल्पना को भी रखती है एवं नेताजी के सर्वधर्मभाव को भी प्रस्तुत करती है। 'सुपरइम्पोज' के माध्यम से विशिष्ट तिथियों एवं स्थानों के बारे में बताया गया है। वर्ष 1945 में हुए विमान हादसे में नेताजी की मृत्यु की खबर से पहले निर्देशक नेताजी के योगदान को रेखांकित कर चुके होते हैं। क्रांति बलिदान मांगती है की बात करने वाले नेताजी का दिया नारा 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' एवं 'जय हिन्द' भारत के जनमानस में क्रांति का संचार करता है।

बदलते परिवेश एवं तकनीकी बदलाव का असर सिनेमाई चरित्र चित्रण पर भी पड़ता हुआ दिखता है। 'मेहताब' एवं 'कंगना रनौत' अभिनीत 'झाँसी की रानी' की मूल कहानी भले ही 'झाँसी की रानी' को केंद्र में रखकर आगे बढ़ती है परन्तु इन दोनों फिल्मों में मूल किरदार को अलग अन्दाज में प्रस्तुत किया गया है। ऐसा ही शहीद भगत सिंह जी पर आधारित फिल्मों में भी देखने को मिलता है कहानी में शामिल ऐतिहासिक सन्दर्भ एवं निर्देशक का दृष्टिकोण सिनेमाई चरित्र चित्रण को प्रभावित करता दिखलाई देता है कुछ फिल्मों में पारिवारिक पृष्ठभूमि को भी प्रमुखता से शामिल किया गया है जिससे चरित्र चित्रण करते समय भावनात्मक पहलुओं को उभारने में मदद मिलती है। सभी फिल्मों में 'देशभक्ति' के भाव से लबरेज गाने को अवश्य प्रयुक्त किया गया है, साथ ही नायकों द्वारा दिये नारों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ी सभी फिल्मों में किरदार का चयन करते समय अभिनेता के हाव–भाव, कद–काठी, एवं उसके चेहरे का ध्यान रखा गया है जिससे वह किरदार मूल नायक के समीप लगे। राष्ट्र नायकों का रूपहले पर्दे पर चरित्र चित्रण करते समय अधिसंख्य निर्देशकों ने विषय के साथ न्याय किया है, हालाँकि सिनेमाई नाटकीकरण के अभाव में कुछ निर्देशक 'बॉक्स ऑफिस' पर असफल रहे हैं जबकि फिल्म को समीक्षकों से अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। हिन्दी सिनेमा ने भारत माँ के अमर–सपूतों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर हमारे दिलों में उनकी छवि गढ़ने का कार्य किया है तो वहीं उनकी कहानी को हमारे मन मस्तिष्क में बैठाने का कार्य किया है। ■

ISSN No. 2581-3528

प्रधानमंत्री मोदी की ऐतिहासिक विदेश यात्रा, क्या है संदेश?

मृत्युंजय दीक्षित
लेखक एवं साहित्यकार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 11 वर्ष के कार्यकाल में उनकी अब तक की सबसे लंबी 5 देशों घाना, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, अर्जेंटीना, ब्राजील और नामीबिया की यात्रा संपन्न हो चुकी है। इन देशों ने जिस प्रकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत तथा उनका सम्मान किया उससे भारत का विश्वमित्र स्वरुप उभर कर आया है। आज विश्व के अनेकानेक देश प्रधानमंत्री मोदी को सम्मानित कर रहे हैं तथा उनके विचारों को आत्मसात करने का प्रयास कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी का पांच देशों की यह यात्रा भविष्य को एक नई राह दिखाने वाला सिद्ध हो सकती है। प्रधानमंत्री मोदी की यह यात्रा इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस समय में वैश्विक स्तर पर काफी उथल–पुथल मची हुई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नए गठजोड़ बन बिगड़ रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी यात्राओं में पहलगाम आतंकवादी हमलों को प्रमुखता से उठाकर सभी देशों को आतंकवाद के खिलाफ सतर्क किया तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसी संस्थाओं में सुधार करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने का प्रयास किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जिन भी देशों में जाते हैं उनको सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक व भावनात्मक रूप से भारत के निकट लाने का प्रयास करते है। इस यात्रा का एक पड़ाव ब्राजील में आयोजित ब्रिक्स सम्मेलन भी था जिसमें भारत के विचारों को प्रमुखता मिलने से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जिस प्रकार से नये टैरिफ युद्ध की घोषणा की है उससे उनकी बौखलाहट भी सामने आ रही है आज वैश्विक जगत के अधिकांश देश अमेरिकी दादागिरि से डर नहीं रहे हैं अपितु उनकी हंसी उड़ा रहे हैं। अमेरिका जिस प्रकार से टैरिफ युद्ध कर रहा है उससे केवल और केवल उसका ही नुकसान होने जा रहा है क्योंकि अब पूरी विश्व भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रही है क्योंकि बडे–बड़े निवेशक भारत आना चाह रहे हैं।

घाना– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी पांच दिवसीय यात्रा के प्रथम चरण में घाना पहुंचे जहां उनका भव्य स्वागत किया गया। प्रधानमंत्री मोदी को यहां पर घाना का सर्वोच्च नागरिक सम्मान “द आफिसर आफ द आर्डर आफ द स्टार आफ घाना” से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके नेतृत्व साहसिक सुधारों के लिए जरूरी कदम उठाने वैश्विक विकास और भारत व घाना के संबंधों को प्रगाढ़ बनाने के लिए दिया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने घाना की संसद को भी संबोधित किया जहां पर उनका संबोधन सांसदों ने बहुत ध्यान से सुना और पूरी संसद तालियों की आवाज से गूंज उठी। मोदी ने कहा कि विश्व नए और जटिल संकटों से गूंज रही है जसे जलवायु परिवर्तन, महामारी, आतंकवाद और साइबर सुरक्षा। बदलती परिस्थितियों में वैश्विक शासन में विश्वसनीय और प्रभावी सुधारों की आवश्यकता है। अफ्रीकी संघ हमारी अध्यक्षता में जी–20 का अस्थायी सदस्य बना। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी यात्रा के दौरान घाना के राष्ट्रपति जान महामा को एक हस्तनिर्मित बिदरी फूलदान तो उनकी पत्नी लॉर्डना महामा को चांद का पर्स उपहार में दिया। घाना के उपराष्ट्रपति को कश्मीर की पश्मीना शाल भेंट की। जब घाना में पीएम मोदी को तोपों की सलामी दी गई तो उससे सबसे ज्यादा जलन चीन को हो रहीं थी।

घाना पहुंचकर प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति महामा से द्विपक्षीय वार्ता की और कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किये। सबसे अहम समझौता रेयर अर्थ मिनरल्स की माइनिंग को लेकर हुआ जो चीन के प्रभुत्व को चुनौती देने की दिशा में बड़ा कदम है। यात्रा के दौरान भारत–घाना साझेदारी रणनीतिक, आर्थिक सहयेग के एक नये युग की शुरूआत हुई है। दोनों नेताओं ने आतंकवाद के खिलाफ सहयोग को और मजबूत करने का संकल्प भी लिया।

त्रिनिदाद एंड टोबैगो – घाना की यात्रा के बाद प्रधानमंत्री मोदी त्रिनिदाद एंड टोबैगो पहुंचे और वहां पर भी उनका भव्य स्वागत किया गया। यह एक ऐसा देश है जिसकी स्थापना में भारतीयों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहां पर बिहार से संबंध रखने वाले यदुवंशियों की तादाद काफी अच्छी है जिनका व्यापक प्रभाव है। यहां पर भी प्रधानमंत्री मोदी को सर्वोच्च नागरिक सम्मान “द आर्डर ऑफ द रिपब्लिक ऑफ त्रिनिदाद एंड टोबैगो” से सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने यहां पर भी संसद को संबोधित किया।

प्रधानमंत्री मोदी ने यहां पर रह रहे भारतवंशियों को संबोधित करते हुए ऐलान किया कि अब भारतवंशियों की छठीं पीढ़ी को भी ओसीआर कार्ड मिलेंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने त्रिनिदाद एंड टोबैगो की प्रधानमंत्री कमला प्रसाद बिसेसर को सरयू नदी का जल और राम मंदिर की कलाकृति भेंट की। भारत और त्रिनिदाद एंड टोबैगो के मध्य द्विपक्षीय रिश्तों को मजबूत करने के लिए गंभीर चर्चा हुई तथा कई समझौतों पर हस्ताक्षर भी किए गये।

अर्जेंटीना - यात्रा के तीसरे अहम पढ़ाव में पीएम मोदी अर्जेंटीना की राजधानी ब्यूनस आयर्स पहुंचे वहां पर भी उनका भव्य स्वागत किया गया। यहां पर भारत और अर्जेंटीना के मध्य खनिज व्यापार एवं ऊर्जा समेत विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढाने पर गंभीर चर्च्रा की गई। अर्जेटीना भारत के साथ अच्छा निवेशक सहयोगी है और अब उसके साथ व्यापार को और बढ़ाने पर चर्चा की गई जिसमे सफलता मिली है। यह भारत का एक प्रमुख सहयेगी रहा है विशेषकर आतंकवाद के खिलाफ लडाई और जम्मू कश्मीर जैसे ज्वलंत मुददों पर सदा भारत का साथ दिया है। यह यूरोपीय यूनियन का सक्रिय सदस्य है और भारत इसके माध्यम से यूरोपियन यूनियन के अन्य सदस्यों के मध्य आतंकवाद के खिलाफ लडाई हो या फिर संयुक्तराष्ट्र में स्थाई सदस्यता के लिए सभी देशों को एक समान राय पर ला सकता है। 57 वर्षे में पहली बार किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने अर्जेटीना यात्रा की यहां पर महत्वपूर्ण खनिजों तेल ओर गैस रक्षा परमाणु ऊर्जा कृषि विज्ञान और प्रोद्यौगिकी कृषि में ड्रोन उपयोग व मत्स्य पालन और बिजली पारेषण लाइनों की निगरानी आईसीटी उजिटल सार्वजनिक अवसंरचना यूपीआई अंतरिक्ष रेलवे फार्मा खेल ओर लोगों के बीच संबंधों के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने का आह्वान किया गया। भारत-मर्कोसर अधिमान्य व्यापार समझौते के विस्तार पर चर्चा की गई। अजेंटीना की राजधानी ब्यूनस आयर्स में प्रधानमंत्री मोदी को "की ऑफ द सिटी" का सम्मान दिया गया। यह सम्मान विश्व के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति को ही दिया जाता है।

ब्राजील - ब्राजील के रियो डिजेनेरियों में आयोजित 17 वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ब्राजील पहुंचे वहां पर भी उनका भव्य स्वागत किया गया। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भारत की आवाज व विचारों को पूर्ण समर्थन मिला। ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका को मिलाकर ब्रिक्स अब और अधिक मजबूत हो रहा है। इसमें मिस्र इथियोपिया ईरान सऊदी अरब यूएइ के बाद अब इंडोनेशिया के साथ 11 देश जुड़ गये हैं। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की अगली अध्यक्षता करने का भारत को अवसर मिला है यह अत्यंत गर्व की बात है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि पहलगाम आतंकी हमले की कडी निंदा का प्रस्ताव पारित हुआ और यहां पर प्रधानमंत्री मोदी का जो भाषण हुआ है उससे चीन, पाकिस्तान व आतंकी समूह व उनके किसी भी प्रकार का समर्थन करने वाले तत्व हिल गये हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने आश्वासन दिया कि जिस प्रकार से भारत ने जी -20 की अध्यक्षता करी थी उसी प्रकार वह अगले वर्ष ब्रिक्स की अध्यक्षता करेगा।

शिखर सम्मेलन की समाप्ति के बाद ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डी सिल्वा के साथ द्विपक्षीय वार्ता हुई तथा ब्रासीलिया की यात्रा में व्यापार, रक्षा, अंतरिक्ष और स्वास्थ्य सहयोग पर वार्ता हुई। व्यापार, वाणिज्य और निवेश की निगरानी के लिए मंत्रिस्तरीय तंत्र की स्थापना का निर्णय हुआ। ब्राजील के साथ छह समझौतों पर हस्ताक्षर हुए। प्रधानमंत्री मोदी को ब्राजील का सर्वोच्च सम्मान "नेशनल ऑर्डर ऑफ सदर्न क्रॉस मिला।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जिन भी देशों में जाते हैं उनको सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक व भावनात्मक रूप से भारत के निकट लाने का प्रयास करते हैं। इस यात्रा का एक पड़ाव ब्राजील में आयोजित ब्रिक्स सम्मेलन भी था जिसमें भारत के विचारों को प्रमुखता मिलने से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जिस प्रकार से नये टैरिफ युद्ध की घोषणा की है।

नामीबिया - अपनी यात्रा के अंतिम चरण में प्रधानमंत्री मोदी नामीबिया पहुंचे वहां पर भी उनका भव्य स्वागत किया गया। यहां पर भी प्रधानमंत्री मोदी को नामीबिया का सर्वोच्च नागरिक सम्मान आर्डर 'आफ द मोकसट एंशिएंट वेल्विवित्वया मिराबिलिस' से सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने नामीबिया की संसद के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करके अप्रतिम इतिहास रच दिया। नामीबिया में उद्यमिता विकास केंद्र की स्थापना और स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए गये। नामीबिया ने वैश्विक जैव ईधन गठबंधन, आपदारोधी अवसरंचना गठबंधन और यूपीआई तकनीक अपनाने के लिए लाइसेंसिंग समझौते पर हस्ताक्षर करने वाला विश्व का पहला देश बन गया।

प्रधानमंत्री मोदी की ताजा यात्रा के दौरान कई विश्व रिकार्ड बने हैं जिसमे पहली बार सभी पांच देशों ने प्रधानमंत्री मोदी को सम्मानित किया और कुल मिलाकर अभी तक 27 देश उन्हें अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित कर चुके हैं। विपक्ष सरकार की आरोप लगाता रहता है किंतु भारत के लिए यह गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब तक विश्व के 16 देशों की संसद को संबोधित कर चुके हैं। ऐसा अदभुत रिकॉर्ड अभी तक भारत का कोई भी प्रधानमंत्री नहीं बना सकते हैं खबर यह भी है कि अभी विश्व के अनेकानेक देश उन्हें सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित करना चाह रहे हैं और इसके लिए वह उनसे समय मांग रहे हैं।

अफ्रीकी देशों को चीनी मकडजाल से बचाने के लिए भारत के पास अफ्रीका में एक बहुत बड़ा अवसर है। ■

ISSN No. 2581-3528

आत्मनिर्भरता

'रजनी' का अचार, आत्मनिर्भरता की मिसाल

मेरठ की एक साधारण गृहिणी रजनी की कहानी जितनी सादगी से शुरू होती है, उतनी ही गहराई से दिल को छू जाती है। आज उनकी जो सफलता है उसके पीछे का संघर्ष हर उस महिला की आवाज है, जिसने हालात के आगे झुकने से इनकार कर दिया। रजनी के पति टेलर हैं जिनका महामारी के दौरान काम पूरी तरह बंद हो गया। आमदनी का एकमात्र माध्यम थम गया। घर के खर्च के लिए जेब खाली हो गई, लेकिन रजनी का हौसला भरा हुआ था। जिस रसोई में पहले घर का स्वाद तैयार होता था, अब वहीं रसोई आमदनी का जरिया बनने जा रही थी। रजनी ने अपने अचार बनाने के हुनर को चुना। न कोई बड़ी योजना, न कोई टीम – सिर्फ घर की रसोई, मसालों की सुगंध और एक गहरा विश्वास। उन्होंने सबसे पहले अपने मोहल्ले में अचार बाँटना शुरू किया। स्वाद ने सबका दिल जीता। इसके बाद उन्होंने जिला उद्योग केंद्र से प्रशिक्षण लिया और सरकारी योजना से 10,000 रुपये का लोन लेकर काम शुरू कर दिया। काम बढ़ा तो फिर 1 लाख रुपये का बैंक लोन लेकर अपने काम को आकार दिया।

धीरे–धीरे 'रजनी' नाम ब्रांड बन गया। उनके द्वारा तैयार किया गया आम, आंवला, मुरब्बा, मूली, करेला और मिक्स अचार अब मेरठ तक सीमित नहीं रहा, ये स्वाद अब देश भर में पहुँच चुका है। रजनी अकेली नहीं चल रहीं, उनके साथ अब 10 से अधिक महिलाएं रोजगार पा चुकी हैं। कई महिलाएं उनसे सीखने आती हैं, ये जानने कि कैसे रसोई की चुप्पी को आत्मनिर्भरता की आवाज में बदला जा सकता है। रजनी ने न सिर्फ अचार बनाए, उन्होंने अपने जैसे कई घरों के लिए उम्मीद का स्वाद तैयार किया।

अब रोजगार भी, जंगलों की सुरक्षा भी

नैनीताल, उत्तराखण्ड : चीड़ के पेड़ों से झड़ती वो सूखी पत्तियाँ, जिन्हें कभी 'मौत की राख' कहा जाता था। वहीं पत्तियाँ जो हर गर्मी में पहाड़ों को निगल जाती थीं, जंगलों को राख बना देती थीं, गांवों को खाली कर देती थीं, आज वही पत्तियाँ पहाड़ की बेटियों के हाथों में सशक्तिकरण और सम्मान का प्रतीक बन चुकी हैं। उत्तराखंड के नैनीताल वन प्रभाग में इस बार जंगलों से 4150 क्विंटल पिरूल इकट्ठा किया गया है। ये वही पत्तियाँ हैं जो कभी आग की चिंगारी बनती थीं, अब फैक्ट्रियों में जाकर बायोमास ईंधन और फ्यूल ब्रिकेट बन रही हैं।

इस परिवर्तन की सबसे मजबूत कड़ी हैं – गांव की वो महिलाएं, जो हर सुबह जंगलों में जाती हैं, पिरूल बटोरती हैं और घर लौटती हैं, न केवल थैलों में सूखी पत्तियाँ लेकर अपितु आत्मनिर्भरता की रोटी और गर्व का एहसास लेकर। सरकार की 'पिरूल लाओ, पैसा पाओ' योजना के तहत महिलाओं को 10 रुपये प्रति किलो की दर से भुगतान किया जा रहा है। बिना कागजी झंझट, सीधा उनके बैंक खातों में। इस अभियान से अब तक 21 महिला स्वयं सहायता समूह और 400 से अधिक महिलाएं जुड़ चुकी हैं। अब उनके हाथों में सिर्फ झाड़ू या बेलचा नहीं, अपने भविष्य की चाबी है। योजना को मजबूती देने के लिए वन विभाग ने पांच अलग–अलग संस्थानों से अनुबंध किया है, जो पिरूल को खरीदकर उपयोगी उत्पाद बना रहे हैं। यानि अब जंगल की सूखी पत्तियाँ सिर्फ जमीन पर नहीं बिछीं बाजार में भी बिक रहीं हैं और मेहनत की कीमत मिल रही है।

ISSN No. 2581-3528

कूड़ा बना कमाई का जरिया

मेरठ, उत्तर प्रदेश! जब देश के अधिकतर गाँव और शहर कूड़े–कचरे की समस्या से जूझ रहे हैं, तब उत्तर प्रदेश के मेरठ का एक छोटा सा गाँव मोहिउद्दीनपुर पूरे देश को नई दिशा दिखा रहा है – जहां कचरा अब सिर्फ गंदगी नहीं, अपितु कमाई, बिजली और आत्मनिर्भरता का स्रोत बन गया है। इस गाँव ने वर्ष 2022 में एक अनोखी शुरुआत की, जहाँ हर दिन घरों से निकलने वाला जैविक कूड़ा को घर – घर से इक्कठा कर के सीधे एक ऊर्जा संयंत्र में भेजा जाता है और वहाँ से बिजली बनती है, जिससे गाँव की गलियाँ, चौक–चौराहे, सार्वजनिक स्थल और सरकारी भवन जगमगा उठते हैं और यही नहीं, इस बिजली उत्पादन से गाँव हर साल लगभग 10 लाख रुपये की आमदनी भी कर रहा है। पहले जहां बदबू, गंदगी और बीमारियाँ आम दृश्य थीं, अब वहां हर कोना साफ है, हर गली रौशन है और हर चेहरा आत्मविश्वास से भरा है। इस नवाचार में अजैविक कचरे को भी बेकार नहीं जाने दिया गया। उसे छांटकर रिसाइक्लिंग व बिक्री के लिए अलग कर दिया जाता है। आज यह गाँव एक मॉडल बन चुका है, जहाँ 'स्वच्छता', 'सतत ऊर्जा' और 'आर्थिक आत्मनिर्भरता' तीनों एक साथ पनप रही हैं। यह साबित करता है कि अगर सोच बदली जाए तो वही कचरा जो कभी बोझ था, वही अब भविष्य की चमक बन सकता है। यह एक नया भारत है, जो गंदगी में भी संभावना देखना जानता है और कूड़े को भी 'कंचन' में बदल देना उसकी नई पहचान बनती जा रही है।

90 दिनों में ऐसे लखपति बने किसान

एटा, उत्तर प्रदेश ! बदलते वक्त के साथ अब खेतों में भी बदलाव की बयार बह रही है। परंपरागत खेती की बढ़ती लागत और कम मुनाफे से परेशान किसान अब नई राहों की ओर कदम बढ़ा चुके हैं और यह राह है बेबी कॉर्न व स्वीट कॉर्न की खेती। उत्तर प्रदेश के एटा जिले में सैकड़ों बीघा जमीन पर लहलहा रही इन सुनहरी बालियों ने साबित कर दिया है कि अगर सोच बदलो, तो धरती भी सोना उगल सकती है।

इस फसल की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह केवल 70 से 90 दिनों में तैयार हो जाती है और परंपरागत मक्का के मुकाबले 4 गुना अधिक दाम पर बिकती है। जहां आम मक्के की कीमत 2000 रुपये प्रति क्विंटल होती है, वहीं बेबी कॉर्न और स्वीट कॉर्न को होटल व रेस्तरां में सप्लाई कर 8 से 10 हजार रुपये प्रति क्विंटल तक की कीमत मिल रही है। इतना ही नहीं, इसकी मांग शहरों में सलाद, सूप, पिज्जा, अचार जैसे व्यंजनों में लगातार बढ़ती जा रही है, जिससे किसानों की आमदनी भी दिन दूनी रात चौगुनी की तीव्रता से बढ़ रही है। खेती को ठेके पर देकर या मौसम की बंदिशों से परे इसे किसी भी समय उगाकर किसान अब घाटे से नहीं, मुनाफे से बात कर रहे हैं। यह फसल न केवल कम समय में तैयार होती है अपितु स्वास्थ्य के लिहाज से भी बेहद पौष्टिक और लाभकारी मानी जाती है।

पर्यावरण
'प्रकृति की पुकार'

हरियाली की चादर ओढ़े, धरती करती है पुकार,
संभालो मुझको मानव, मत करो अत्याचार।
नदियाँ बहतीं मीठा जल, पहाड़ों से लातीं शांति,
कटते वृक्ष, जलते जंगल, अब रोती है प्रकृति की सांति।

नीला अम्बर, स्वच्छ पवन, जीवन का ये आधार,
प्रदूषण से हुआ धुंधला, अब कैसा ये व्यवहार?
पंछी उड़ते दूर कहीं, ढूंढें अपना घर,
कटते बाग–बगीचों ने छीन लिया उनका अवसर।

धरती माता थक चली है, बोझ सहन नहीं होता,
विकास के नाम पर हर रोज, उसका श्रृंगार है खोता।
प्लास्टिक, धुआं, रसायन से, दूषित होता है पानी,
बिन जल कैसे जिएंगे हम, यह बात है जानी–पहचानी।

नदियाँ सूख चलीं अब, पर्वत हो गए नग्न,
प्रदूषण ने निगल लिया, हरियाली का मग्न।
हवा जो जीवन देती थी, अब है रोगों की खान,
बिलखती है प्रकृति सारी, सुन लो उसकी जान।

अब भी वक्त है जाग जाओ, संकल्प लो संजीवनी का,
पेड़ लगाओ, जल बचाओ, बढ़ाओ स्नेह पृथ्वी का।
संरक्षण ही समाधान है, यही भविष्य की बात,
चलो मिलकर रचें नव भारत, हरियाली के साथ।

डॉ. वेद प्रकाश : एसोसिएट प्रोफेसर
के.डी. कॉलेज सिंभावली, जनपद - हापुड़

ISSN No. 2581-3528

सहयोगी बनें कांवड़िये

– ललित शंकर

जैसे ही भारत मे सावन का पवित्र माह आता है। पूरा भारत शिवमय हो जाता है और अधिकतम हिस्सा भगवा हो जाता है। बहुत बड़ी संख्या में शिवभक्त कांवड़ लेने के लिए शिव की नगरी हरिद्वार की ओर प्रस्थान करते है। लगभग दो सप्ताह तक हरिद्वार से यूपी, दिल्ली, हरियाणा, बिहार सहित कई प्रदेशों तक एक लंबी कांवड़ियों की कतार दिखाई देती है। शिव भक्तों की आस्था का ये सैलाव निरन्तर बढ़ता जा रहा है। उत्तराखंड, यूपी, दिल्ली व हरियाणा का शासन व प्रशासन बड़ी श्रद्धा से शिवभक्तों के लिए व्यवस्था में लगता है। यंहा तक कि बहुत बड़ी संख्या में समाज के सेवाभावी बन्धु जगह जगह पर शिवभक्तों के लिए भोजन, दवा व विश्राम आदि के लिए व्यवस्था करते हैं। शासन प्रशासन व समाज अपनी जिम्मेदारी को बढ़ चढ़कर पूरी करता दिखाई देता है। ऐसे में कांवड़ उठाने वाले शिवभक्तों की भी जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि शासन प्रशासन व समाज द्वारा की जा रही व्यवस्था में सहयोगी बने। कई बार देखने में आता है कि शिवभक्त कांवड़ लेकर मध्य मार्ग में चलते हैं जिससे दुर्घटना होने की स्थिति बन जाती है। कई जगह देखने में ये भी आता है कि कुछ युवा शिवभक्त अपनी पवित्र कांवड़ को बीच सड़क पर ही रख देते हैं। कई बार तो ऐसी भी घटनाएं देखने में आयी है जिसमें दूसरे समाज के बन्धुओं के वाहनों द्वारा अनजाने में शिवभक्तों से टकराव हो जाता है। जिससे भोलेभाले शिवभक्त एक दम उग्र रूप ले लेते है। जिससे सामाजिक संघर्ष की स्थिति बन जाती है। एक घटना में एक स्कॉर्पियो गाड़ी छूने पर कांवड़ियों द्वारा एक व्यक्ति को इतनी बुरी तरह से मारा है कि वो गम्भीर स्थिति में हॉस्पिटल में भर्ती है। स्कॉर्पियो को पूरी तरह तोड़ दिया गया। दूसरी घटना में एक ट्रक की चपेट में कांवड़ियों का ट्रेक्टर आ गया जिससे विवाद इतना बढ़ा कि बड़ी संख्या में कांवड़ियों ने बीच सड़क पर खड़े होकर वाहनों पर पथराव कर दिया जिसमें कई यात्री घायल हो गए। देखने में आता है कि कांवड़ यात्रा के समय बड़ी संख्या में शिवभक्त दुर्घटनाओं का भी शिकार हो जाते हैं। जितनी जिम्मेदारी व श्रद्धा से शासन प्रशासन व समाज के बन्धु शिवभक्तों की सेवा में लगते हैं। उतनी जिम्मेदारी शिवभक्तों को भी निभानी चाहिए, वैसे अधिक संख्या में शिवभक्त इस जिम्मेदारी को निभाते है, कुछ ही युवा कंही न कंही अपनी इस जिम्मेदारी से दूर नजर आते हैं। जिस कारण अव्यवस्था की स्थिति उतपन्न हो जाती है। शासन प्रशासन व समाज के वो सभी बन्धु जो शिवभक्तों के लिए बड़ी बड़ी व्यवस्था करते है। केवल व्यवस्था ही नहीं करते यूपी व उत्तराखंड के मुख्यमंत्री अन्य मंत्री व प्रशासन के बंधु शिवभक्त कांवड़ियों पर पुष्प वर्षा भी करते है। मुख्यमंत्री सहित शासन, प्रशासन व्यवस्था में लगे समाज के बन्धुओं को इन शिवभक्तों से विनम्र निवेदन करना चाहिए कि धैर्य रखकर यातायात व अन्य व्यवस्था में सहयोगी बने क्योंकि ये सब व्यवस्था इन्ही के लिये बनाई जाती है। बड़ी संख्या में आने वाले शिवभक्तों को भी आपस में बातचीत करते हुए व्यवस्था में सहयोगी बनने का मन तैयार करना चाहिए। भारत के प्रधानमंत्री सम्बंधित प्रदेशों के मुख्यमंत्री, साधु संत, कथावाचक, जनप्रतिनिधियों व समाज के प्रतिष्ठित बंधुओं तथा न्यूज एंकरों द्वारा शिवभक्तों से व्यवस्था में सहयोगी बनने का विनम्र निवेदन करना चाहिए। जिससे आस्था के इस महाकुंभ में सभी शिवभक्त सकुशल अपने गंतव्य को चले हैं। सावन के इस समरसता के महापर्व में हम सब भी सहयोगी बने।

स्वतन्त्रता आंदोलन में उग्रवाद के प्रणेता लोकमान्य तिलक

लोकमान्य तिलक का जन्म 23 जुलाई, 1856 को रत्नागिरी, महाराष्ट्र के एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। बचपन से ही उनकी रुचि सामाजिक कार्यों में थीं। वे भारत में अंग्रेजों के शासन को अभिशाप समझते थे तथा इसे उखाड़ फेंकने के लिए किसी भी मार्ग को गलत नहीं मानते थे। इन विचारों के कारण पूना में हजारों युवक उनके सम्पर्क में आये। इनमें चाफेकर बन्धु प्रमुख थे। तिलक जी की प्रेरणा से उन्होंने पूना के कुख्यात प्लेग कमिश्नर रैण्ड का वध किया और तीनों भाई फाँसी चढ़ गये।

सन 1897 में महाराष्ट्र में प्लेग, अकाल और भूकम्प का संकट एक साथ आ गया। लेकिन दुष्ट अंग्रेजों ने ऐसे में भी जबरन लगान की वसूली जारी रखी। इससे तिलक जी का मन उद्वेलित हो उठा। उन्होंने इसके विरुद्ध जनता को संगठित कर आन्दोलन छेड़ दिया। नाराज होकर ब्रिटिश शासन ने उन्हें 18 मास की सजा दी। तिलक जी ने जेल में अध्ययन का क्रम जारी रखा और बाहर आकर फिर से आन्दोलन में कूद गये।

तिलक जी एक अच्छे पत्रकार भी थे। उन्होंने अंग्रेजी में 'मराठा' तथा मराठी में 'केसरी' साप्ताहिक अखबार निकाला। इसमें प्रकाशित होने वाले विचारों से पूरे महाराष्ट्र और फिर देश भर में स्वतन्त्रता और स्वदेशी की ज्वाला भभक उठी। युवक वर्ग तो तिलक जी का दीवाना बन गया। लोगों को हर सप्ताह केसरी की प्रतीक्षा रहती थी। अंग्रेज इसके स्पष्टवादी सम्पादकीय आलखों से तिलमिला उठे। बंग–भंग के विरुद्ध हो रहे आन्दोलन के पक्ष में तिलक जी ने खूब लेख छापे। जब खुदीराम बोस को फाँसी दी गयी, तो तिलक जी ने केसरी में उसे भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी।

अंग्रेज तो उनसे चिढ़े ही हुए थे। उन्होंने तिलक जी को कैद कर छह साल के लिए बर्मा की माण्डले जेल में भेज दिया। वहाँ उन्होंने 'गीता रहस्य' नामक ग्रन्थ लिखा, जो आज भी गीता पर एक श्रेष्ठ टीका मानी जाती है। इसके माध्यम से उन्होंने देश को कर्मयोग की प्रेरणा दी।

तिलक जी समाज सुधारक भी थे। वे बाल–विवाह के विरोधी तथा विधवा–विवाह के समर्थक थे। धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में वे सरकारी हस्तक्षेप को पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने जनजागृति के लिए महाराष्ट्र में गणेशोत्सव व शिवाजी उत्सव की परम्परा शुरू की, जो आज विराट रूप ले चुकी है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में उग्रवाद के प्रणेता तिलक जी का मानना था कि स्वतन्त्रता भीख की तरह माँगने से नहीं मिलेगी। अतः उन्होंने नारा दिया – स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर ही रहेंगे।

वे वृद्ध होने पर भी स्वतन्त्रता के लिए भागदौड़ में लगे रहे। जेल की यातनाओं तथा मधुमेह से उनका शरीर जर्जर हो चुका था। मुम्बई में अचानक वे निमोनिया बुखार से पीड़ित हो गये। अच्छे से अच्छे इलाज के बाद भी वे सँभल नहीं सके और एक अगस्त, 1920 को मुम्बई में ही उन्होंने अन्तिम साँस ली।